ऋग्वेद यजुर्वेद

ओ३म्

गौ रक्षा विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 15 (मासिक)
₹ 150 (वार्षिक)

वर्ष : 28 | आश्विन-कार्तिक | वि0स0 2073 | अक्टूबर 2016 | अंक : 10

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम

शरदुत्सव
5 अक्टूबर 2016 से
9 अक्टूबर 2016 तक
आप सभी सादर
आमंत्रित हैं

पण्डित

जिसको परमात्मा और जीवात्मा
का यथार्थ ज्ञान, जो आलस्य
को छोड़कर सदा उद्योगी,
सुखदुःखादि का सहन,
धर्म का नित्य सेवन करने वाला,
जिसको कोई पदार्थ धर्म से छुड़ा
कर अधर्म की ओर न खेंच सके
वह पण्डित कहाता है ॥

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

वैदिक साधन आश्रम तपोवन,

नालापानी, देहरादून–248008

सामवेद अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

नालापानी, देहरादून - 248008, दूरभाष: 0135-2787001

शरदुत्सव (ऋग्वेद यज्ञ एवं योग साधना शिविर)

आश्विन शुक्ल पक्ष चतुर्थी से आश्विन शुक्ल पक्ष अष्टमी विक्रमी सम्वत् 2073 तक

तद्नुसार बुधवार 5 अक्टूबर से रविवार 9 अक्टूबर 2016 तक मनाया जायेगा।

योग साधना निदेशक : स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी महाराज

यज्ञ के ब्रह्मा एवं प्रवचनकर्ता	:	आचार्य ज्येन्द्र जी, गुरूकुल नोएडा
वेद पाठ	:	महर्षि दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरूकुल पौंधा देहरादून के ब्रह्मचारियों द्वारा
यज्ञ के संयोजक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी
भजनोपदेशक	:	श्री कुलदीप जी
भजन, प्रवचन एवं अन्य कार्यक्रमों के संचालक	:	श्री शैलेश मुनि सत्यार्थी एवं श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा

बुधवार 5 अक्टूबर से रविवार 9 अक्टूबर 2016 तक प्रतिदिन

योग साधना	: प्रात: 5.00 बजे से 6.00 बजे तक
संध्या एवं यज्ञ	: प्रात: 6.30 बजे से 8.30 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	: प्रात: 10.00 बजे से 12.00 बजे तक
यज्ञ एवं संध्या	: सायं 3.30 बजे से 6.00 बजे तक
भजन एवं प्रवचन	: रात्रि 7.30 बजे से 9.30 बजे तक

ध्वजारोहण	- बुधवार 5 अक्टूबर 2016 को प्रात: 9:00 बजे।
गायत्री यज्ञ	- बुधवार 5 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10 से 12 बजे तक
तपोवन विद्या निकेतन का वार्षिकोत्सव	- गुरूवार 6 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
उद्बोधन	- आचार्य डॉ. धनन्जय जी एवं आचार्य ज्येन्द्र जी
महिला सम्मेलन	- शुक्रवार 7 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10:00 बजे से 1:00 बजे तक
संयोजिका	- श्रीमती सन्तोष रहेजा जी (दिल्ली)
उद्बोधन	- डॉ. अन्नपूर्णा, डॉ. सुखदा सोलंकी, श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा एवं श्रीमती सरोज आर्या जी
शोभायात्रा	- शनिवार 8 अक्टूबर 2016 को प्रात: 10 बजे तपोभूमि के लिये शोभायात्रा जायेगी
संयोजक	- श्री मंजीत सिंह जी
भजन संध्या	- शनिवार 8 अक्टूबर 2016 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक
भजनोपदेशक	- श्री कुलदीप जी एवं श्रीमती मीनाक्षी पंवार
पूर्णाहुति एवं ऋषिलंगर	- रविवार 9 अक्टूबर 2016 को यज्ञ की पूर्णाहुति, भजन, प्रवचन एवं ऋषिलंगर

नोट : 1. यज्ञ के अतिरिक्त समस्त कार्यक्रम महात्मा प्रभु आश्रित सत्संग भवन में सम्पन्न होंगे।
2. श्री लोकपाल जी योगाचार्य एवं एक्युप्रेशर चिकित्सक द्वारा डायबिटीज, मोतिया बिन्द एवं खर्राटों की नि:शुल्क चिकित्सा की जायेगी।

बस सेवा: रेलवे स्टेशन से तपोवन आश्रम नालापानी के लिए हर समय बस उपलब्ध रहती है।

सप्रेम आमंत्रण

आदरणीय महोदय/महोदया, स्व. बाबा गुरुमुख सिंह जी एवं पूज्य महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी, स्वामी योगेश्वरानन्द जी परमहंस एवं महात्मा प्रभु आश्रित जी ने तपोवन आश्रम को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ स्थान माना था। आपसे प्रार्थना है कि परिवार व ईष्ट मित्रों सहित यज्ञ एवं सत्संग में उपस्थित होकर हमें कृतार्थ करें एवं अपने-अपने समाज/धार्मिक सत्संगों से यह निमंत्रण हमारी ओर से निवेदित करने की कृपा करें। आपके उदार सहयोग के लिए अग्रिम धन्यवाद।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री, ई. प्रेम प्रकाश शर्मा, सन्तोष रहेजा, सुधीर कुमार माटा, मंजीत सिंह, विक्रम बावा, योगेश मुंजाल, डॉ. शशि वर्मा, मनीष बावा, महेन्द्र सिंह चौहान, विजय कुमार, योगराज अरोड़ा, रामभज मदान

एवं समस्त सदस्य, वैदिक साधन आश्रम सोसायटी

ओ३म्

पवमान

वर्ष–28 अंक–10

आश्विन–कार्तिक 2073 विक्रमी अक्टूबर 2016

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,117 दयानन्दाब्द : 192

★

–: संरक्षक :–

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य अभय देव	3
गो रक्षा का महत्त्व	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	4
गोमूत्र में सुवर्ण तो गोदुग्ध में विष क्यों?	डॉ. धर्मवीर	8
'महापुरुषों की जयन्तियां	मनमोहन कुमार आर्य	12
आर्य समाज का पहला नियम	प्रोफेसर रत्न सिंह	16
बुढ़ापा दूर रखने वाला संजीवनी पेय	श्री विट्ठलदासजी तोष्णीवाल	21
आँवला खायें–बुढ़ापा दूर भगायें	काशीनाथ योगाचार्य	22
आत्म–रक्षा	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	23
जीवनोपयोगी संदेश	स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक	24
धर्म, संस्कृति एवं वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द	मनमोहन कुमार आर्य	25
चरैवेति चरैवेति–चलते रहो	ओमप्रकाश अग्रवाल	29
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर	आचार्य आशीष जी	30
श्रद्धांजलि		31
दानदाताओं की सूची		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000 / – प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000 / – प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000 / – प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

गावो विश्वस्य मातरः

वेदों में गो की महिमा का वर्णन अनेक स्थानों पर पाया जाता है। यह वैदिक काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति की प्रतीक रही है। यह हमारे कृषि प्रधान देश की अर्थ–व्यवस्था की रीढ़ है। यजुर्वेद के प्रथम मंत्र में ही गाय को अघ्न्या बताते हुए कहा गया है–'यजमानस्य पषून् पाहि' अर्थात् यजमान् के पशुओं की रक्षा करें। यजुर्वेद के ही एक अन्य मंत्र (१३/४३) में कहा गया है–'गां मा हिंसीरदितिं विराजम्' अर्थात् हे राजन्! तुम्हारे राज्य में विविध गुणों से सुशोभित, अखण्डसुख को देने वाली गाय और भूमि की हिंसा या विनाश नहीं होवे, ऐसी व्यवस्था कीजिए। अथर्ववेद (४.२१.५) मे कहा गया है– 'गावो भगो गाव इन्द्रो...' अर्थात् गौएं ही पुरुष का धन व सौभाग्य हैं, अतः प्रभु मेरे लिए गौओं की कामना करें, मुझे गौएं प्राप्त कराएं। यह गोदुग्ध ही मुख्य हवियों में श्रेष्ठ सोम का भोजन बनता है। हे लोगों! ये जो गौएं हैं, ये ही इन्द्र हैं। गोदुग्ध के सेवन से हृदय और मन से उस परमेश्वर की कामना की जाती है। भाव प्रकाश निघण्टु में गोदुग्ध के गुण बताते हुए इसका रस मधुर, शीतल, वात और पित्त तथा रक्त के विकार नष्ट करने वाला बताया गया है। यह दोष, धातु, मल तथा नाड़ियों को आर्द्र करने वाला, भारी तथा सदैव सेवन करने वाले के सभी रोग और वार्धक्य को नष्ट करता है। इसका घृत व दुग्ध हमारा कल्याण करने वाला और पुष्टिकारक है। यजुर्वेद (३८.८) के एक मंत्र में कहा गया है– 'इन्द्रो विश्वस्य राजति...'। इस मंत्र का भावार्थ यह है कि हे ईश्वर! आपकी कृपा से हमारे पुत्रादि सुखी होवें और हमारे गौ आदि पशुओं के लिए भी सुख हो। महर्षि ने न केवल अपने हृदय के उद्गारों को 'गोकरुणानिधिः' नाम की एक पुस्तक के माध्यम से हमारे समक्ष रखा अपितु गोरक्षा को सार्वजनिक आन्दोलन का रूप दिया। गौ की महिमा का विस्तृत वर्णन ऋग्वेद के दशं मण्डल के सूक्त १६६ में भी मिलता है। इस सूक्त के मंत्रों में विशेष रूप से कहा गया है कि हमारे पास 'सरूपाः, विरूपाः और एकरूपाः' श्रेणियों की गौएँ होनी चाहिएं। किन्हीं के दूध में मक्खन अधिक हो, किन्हीं के दूध में मलाई अधिक हो और किन्हीं के बछड़े अधिक शक्तिशाली बैल बन सकें। गोदुग्ध सेवन सात्त्विक वृत्ति को जन्म देकर हमें प्रभु की ओर उन्मुख करता है। यह माता के समान दुग्ध प्रदान कराकर सुपुष्ट करने वाली है। जब बच्चे के पैदा होने पर जातकर्म संस्कार किया जाता है, उसे सर्वप्रथम गोघृत व मधु चटाया जाता है और एक मंत्र का उच्चारण किया जाता है– 'प्र ते ददामि मधुनोघृतस्य....' इस मंत्र का भावार्थ यह है कि बच्चा सौ वर्ष तक जिए। गोघृत व मधु चटाने का उद्देश्य यह है कि ये वस्तुएं पुष्टिकारक और लाभकारी हैं। हमारी माताएं बाल्यावस्था से दो–ढाई वर्ष तक दुग्धपान कराती हैं परन्तु गौमाता हमारे जीवन पर्यन्त हमें दुग्धपान कराती है। गौ का अनुपम मातृस्थानीय सहयोग है, इसीलिए ''गावो विश्वस्य मातरः'' कहा गया है। हम समस्त आर्यों का कर्तव्य है कि ऐसी गोमाता की रक्षा में हम तत्पर रहें। इन्हीं उद्देश्यों को स्मरण कराने हेतु यह गोरक्षा विशेषांक सुधि पाठकों को समर्पित है। इस माह पड़ने वाले समस्त पर्वों के लिए सुधि पाठकों को हमारी शुभ कामनाएं।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❀ वेदामृत ❀

कल्याण करने वाला कभी दुर्गति को प्राप्त नहीं होता

यद् अंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत् तत् सत्यमङ्गिरः।। –ऋ० १।१।6

ऋषिः–**मधुच्छन्दा वैश्वामित्रः।** देवता–**अग्निः।** छन्दः–**निचृद् गायत्री।**

विनय– हे प्रकाशमय देव! यह सच है कि स्वार्थत्यागी का कल्याण ही होता है। पर दुनिया में ऐसा दिखाई नहीं देता। दुनिया में तो दिखता है कि स्वार्थमग्न लोग ही आनन्द–मौज उड़ा रहे हैं और स्वार्थत्यागी दुःख भोग रहे हैं। स्वार्थी विजय–पर–विजय पा रहे हैं, दूसरों पर ज़ुल्म कर रहे हैं और स्वार्थत्यागी पुरुष सताए जा रहे हैं। परन्तु हे मेरे प्यारे देव! हे मेरे जीवनसार! आज मैं तेरी परम कृपा से सूर्य की तरह यह साफ देख रहा हूँ कि आत्म–बलिदान करनेवाले का तो सदा कल्याण ही होता है। इसमें कुछ संशय नहीं रहा; यह अटल है, बिल्कुल स्पष्ट है। दुनिया की ये प्रतिदिन की उल्टी दिखाई देने वाली घटनाएँ भी आज मेरी खुली आँखों के सामने से इस प्रकाशमान सत्य को छिपा नहीं सकती हैं कि आत्मसमर्पण करने वाले के लिए कल्याण–ही–कल्याण है। मैं देखता हूँ कि दुनिया में चाहे कभी सूर्य टल जाए, ऋतुएँ बदल जाएँ, पृथिवी उल्टी घूमने लग जाय और सब असंभव संभव हो जाय, पर यह तेरा सत्य अटल है कि आत्म–बलिदान करने वाले का अकल्याण कभी नहीं हो सकता– **''नहि कल्याणकृत् कश्चित् दुर्गति तात गच्छति''** (''हे प्यारे! कल्याण करने वाला कभी दुर्गति को नहीं प्राप्त होता'') कृष्ण भगवान् के गाए हुए ये सान्त्वनामय शब्द परम सच्चे हैं।

हे जीवन के जीवन! जब मनुष्य स्वार्थ को त्यागता है, आत्म–बलिदान करता है तो उस त्याग व बलिदान द्वारा हे कल्याणस्वरूप! वह केवल तेरे और अपने बीच की रुकावट का ही त्याग करता है, निवारण करता है और तेरे कल्याणस्वरूप को पाता है। भला, आत्म–बलिदान में अकल्याण की गुंजाइश ही कहाँ है? सचमुच, स्वार्थशून्य पवित्र पुरुषों पर आए हुए कष्ट, दुःख, आपत् सब क्षणिक होते हैं। उनके सम्बन्ध में जो अक्षणिक है, सत्य है, अटल है, वह तो उनका कल्याण है।

शब्दार्थ–अंग हे प्यारे! **अंगिरः** मेरे जीवनसार **अग्ने** प्रकाशक देव! **यत् त्वं** जो तू **दाशुषे** आत्मबलिदान करने वाले का **भद्रं** कल्याण **करिष्यसि** करता है **तत्** वह **तव** तेरा **सत्यं इत्** सच्चा, न टलनेवाला नियम है।

गो रक्षा का महत्त्व

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

भारतीय संस्कृति में गौ के प्रति जो आदर और स्नेह की गहरी भावना पाई जाती है, उस का मूल स्रोत आर्यों के धर्मग्रन्थ वेद हैं। वैदिक ऋषियों ने कहा है—''गावो विश्वस्य मातरः'' अर्थात् गौएँ विश्व की माता के तुल्य हैं। ये विश्व का पोषण करने वाली हैं। अतः गोसेवा और गोरक्षा करना हमारा पावन कर्त्तव्य है। गौ की महिमा का विस्तृत वर्णन ऋग्वेद के दशं मण्डल के सूक्त १६९ में भी मिलता है। इस सूक्त के मंत्रों में विशेष रूप से कहा गया है कि हमारे पास 'सरूपाः, विरूपाः और एकरूपाः' श्रेणियों की गौएँ होनी चाहिएं। किन्हीं के दूध में मक्खन अधिक हो, किन्हीं के दूध में मलाई अधिक हो और किन्हीं के बछड़े अधिक शक्तिशाली बैल बन सकें। यह भी कहा गया है कि 'पर्जन्य गौओं के लिए बहुत बड़ा सुख देवे', इस वाक्य का भावार्थ यह है कि जहां तक हो सके वर्षा से उत्पन्न जंगल के घास को गौओं को अधिक खिलाना चाहिए। गौओं को जंगल में चरने के लिए भेजना चाहिए। जहां तक सम्भव हो सके उन्हें वर्षा का शुद्ध जल पिलाना चाहिए। ऋग्वेद (१०.१६९.३) में कहा गया है कि राष्ट्र के सभी लोगों को गौ का दूध पीना चाहिए। गौएँ अपने शरीर से उत्पन्न दूध को देवों को भेजती हैं।

वेद में गौहत्या का विरोध—वेद में अनेक स्थानों पर गौ को 'अघ्न्या' कहा गया है। यजुर्वेद (१३.४३) में कहा गया है—''गां मा हिंसी'' अर्थात् गौ की हिंसा मत करो। ऋग्वेद के एक मंत्र में कहा गया है—

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानामृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।। (८.१०१.१५)

अर्थात् गौ राष्ट्र के रुद्र और आदित्य ब्रह्मचारी रह कर विद्या प्राप्त करने वाले प्रजाजनों की माता, पुत्री और बहिन है। इस मंत्र का भावार्थ यह है कि प्रजाजनों को गौ के साथ माता, पुत्री और बहिन के समान प्रेम भाव रखना चाहिए। गौ अमृत की नाभि अर्थात् केन्द्र है क्योंकि उससे अमृत जैसे गुणों वाला दूध प्राप्त होता है। मैं परमात्मा, ज्ञानवान् पुरुषों को आज्ञा देता हूँ कि वे निष्पाप और कभी न काटी जाने योग्य गौ को न मारें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की वेद और गौ के प्रति निष्ठा किसी से छिपी नहीं है। महर्षि ने न केवल अपने हृदय के उद्गारों को 'गोकरुणानिधिः' नाम की एक पुस्तक के माध्यम से हमारे समक्ष रखा अपितु गोरक्षा को सार्वजनिक आन्दोलन का रूप दिया था। महर्षि दयानन्द ने अपनी गोकरुणानिधि पुस्तक की भूमिका में कहा है कि 'ऐसा सृष्टि में कौन मनुष्य होगा जो सुख और दुःख को स्वयं न मानता हो?क्या ऐसा कोई भी मनुष्य है कि जिसके गले को काटे वा रक्षा करें, वह दुःख और सुख का अनुभव न करे?जब सब को लाभ और सुख ही में प्रसन्नता है, तो बिना अपराध किसी प्राणी का प्राण वियोग करके अपना पोषण करना यह सत्पुरुषों के सामने निन्दित कर्म क्यों न होवे?सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सब दया और न्याययुक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें

और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनंद में रहे।'

गोरक्षा के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती का आन्दोलन–महर्षि दयानन्द की गाय के प्रति स्नेह, दया और उनके प्रसिद्ध पुस्तक 'गोकरुणा–निधि' में प्रकट होती है। गायों की नृशंस हत्या को देखकर ऋषि दयानन्द के जीवन में कतिपय प्रसंग ऐसे आते हैं जिन अवसरों पर ऋषि दयानन्द के अश्रु बहते हुए देखे गये। देश में बढ़ती हुई गोहत्या देखकर स्वामी दयानन्द सरस्वती रोये थे और उन्होंने गोमाता के वध पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए दो करोड़ भारतवासियों के हस्ताक्षर कराकर ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को एक प्रतिवेदन करते हुए उसमें कहा था– बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या करना महापाप है, इसको बन्द करने से भारत देश फिर समृद्धशाली हो सकता है। गाय हमारे सुखों का स्रोत है, निर्धन का जीवन और धनवान् का सौभाग्य है। भारत देश की खुशहाली के लिए यह रीढ़ की हड्डी है।

महारानी विक्टोरिया को भेजा प्रतिवेदन इस प्रकार था–*"ऐसा कौन मनुष्य जगत् में है जो सुख के लाभ में प्रसन्न और दुःख की प्राप्ति में अप्रसन्न न होता हो। जैसे दूसरे के किये अपने उपकार में स्वयम् आनन्दित होता है वैसे ही परोपकार करने में सुखी अवश्य होना चाहिये। क्या ऐसा कोई भी विद्वान् भूगोल में था, है या होगा, जो परोपकार रूप धर्म और–परहानि स्वरूप अधर्म के सिवाय धर्म और अधर्म की सिद्धि कर सके। धन्य वे महाशय जन हैं जो अपने तन, मन और धन से संसार का उपकार सिद्ध करते हैं। द्वितीय मनुष्य वे हैं जो अपनी अज्ञानता से स्वार्थवश होकर अपने तन, मन और धन से जगत् में परहानि करके बड़े लाभ का नाश करते हैं। सृष्टिक्रम में ठीक ठीक यही निश्चय होता है कि परमेश्वर ने जो जो वस्तु बनाया है वह पूर्ण उपकार के लिये है, अल्पलाभ से महाहानि करने के अर्थ नहीं। विश्व में दो ही जीवन के मूल हैं– एक अन्न और दूसरा पान। इसी अभिप्राय से आर्यवर शिरोमणि राजे महाराजे और प्रजाजन महोपकारक गाय आदि पशुओं को न आप मारते और न किसी को मारने देते थे। अब भी इस गाय, बैल और भैंस आदि को मारने और मरवाने देना नहीं चाहते हैं, क्योंकि अन्न और पान की बहुताई इन्हीं से होती है। इससे सब का जीवन सुखी हो सकता है। जितना राजा और प्रजा का बड़ा नुकसान इनके मारने और मरवाने से होता है, उतना अन्य किसी कर्म से नहीं। इस का निर्णय 'गोकरुणानिधि' पुस्तक में अच्छे प्रकार से प्रकट कर दिया है, अर्थात् एक गाय के मारने और मरवाने से चार लाख बीस हजार मनुष्यों के सुख की हानि होती है। इसलिए हम सब लोग प्रजा की हितैषिणी श्रीमती–राजराजेश्वरी क्वीन महारानी विक्टोरिया की न्यायप्रणाली में जो यह अन्याय रूप बड़े–बड़े उपकारक गाय आदि पशुओं की हत्या होती है, इसको इनके राज्य में से छुड़वा के अति प्रसन्न होना चाहते है। यह हम को पूरा विश्वास है कि विद्या, धर्म, प्रजाहित प्रिय श्रीमती राजराजेश्वरी क्वीन महारानी विक्टोरिया पार्लियामेण्ट सभा तथा सर्वोपरि प्रधान आर्यावर्त्तस्थ श्रीमान् गवर्नर*

जनरल साहब बहादुर सम्प्रति इस बड़ी हानिकारक गाय, बैल तथा भैंस की हत्या को उत्साह तथा प्रसन्नतापूर्वक शीघ्र बन्द करके हम सब को परम आनन्दित करें। देखिए कि उक्त गाय आदि पशुओं के मारने और मरवाने से दूध, घी और किसानों की कितनी हानि होकर राजा और प्रजा की बड़ी हानि हो गई और नित्यप्रति अधिक–अधिक होती जाती है। पक्षपात छोड़ के जो कोई देखता है तो वह परोपकार ही को धर्म और पर हानि को अधर्म निश्चित जानता है। क्या विद्या का यह फल और सिद्धान्त नहीं है कि जिस जिस से अधिक उपकार हो, उस उस का पालन वर्धन करना और नाश कभी न करना। परम दयालु, न्यायकारी, सर्वान्तर्यामी, सर्वशक्तिमान् परमात्मा इस समस्त जगदुपकारक काम करने में हमें एकमत्य करें।''

यह पत्र महर्षि दयानन्द सरस्वती ने स्वयं अन्यों के साथ, अपने हस्ताक्षर करते हुए महारानी को प्रेषित किया था। यही नहीं, परमेश्वर के सिवा कभी भी किसी के आगे नतमस्तक न होने वाले स्वाभिमानी दयानन्द गौमाता की रक्षा हेतु अजमेर के कमिश्नर डेविडसन, राजस्थान के पोलिटिकल एजेंट कर्नल ब्रुक्स और संयुक्त प्रांत (उ0प्र0) के गवर्नर म्योर के समक्ष हाथ जोड़ने को विवश हुए थे। उदयपुर नरेश महाराणा सज्जन सिंह के समक्ष महर्षि ने दशहरा के अवसर पर की जाने वाली पशुबलि से दुःखी होकर निवेदन किया–''आप राजा हैं। मैं इन मूक प्राणियों का वकील बनकर आपके सामने अभियोग लेकर उपस्थित हूँ। बताइए इनका क्या अपराध है?'' महाराणा ने चिरकाल से जारी बलिप्रथा को तुरन्त बन्द करने का संकल्प लिया था।

भारत में गोरक्षा की ऐतिहासिक परम्परा रही है। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र (2/26) में लिखा है कि राजा को गोरक्षा का पूर्ण ध्यान रखना चाहिए। दसवीं शताब्दी तक भारत गोवंश के लिए स्वर्णभूमि के समान था। महमूद गजनवी के आक्रमण (998 से 1030 ई0) से पूर्व मुसलमान सूफी संत भारत में आकर साधना करने लगे थे। वे सब गाय को आदर की दृष्टि से देखते थे। ***मुसलमान आक्रान्ताओं ने विजय के गर्व में गोवध आरम्भ किया था, जबकि इस्लाम में भले ही गोभक्ति का पाठ न मिले, परन्तु इस्लाम धर्म में कहीं भी गोहत्या का विधान नहीं मिलता है। मुसलमानों के आगमन से पूर्व भारत में पारसी लोग आ चुके थे। वे गाय का आदर करते थे। बाबर (1526 से 1530) ने दूरदर्शिता का परिचय देते हुए एक फरमान जारी करके गोहत्या बंद कर दी थी। बदाउनी ने लिखा है कि अकबर के राज्य में हिन्दुओं और जैनियों के प्रभाव से कोई भी गोवध नहीं कर सकता था। इतिहासकार बी.ए. स्मिथ ने जहांगीर के विशय में लिखा है कि वह जाने या अनजाने में भी गोहत्यारों को फांसी पर लटकाने में नहीं हिचकता था। अठारवीं सदी में हैदर अली जो मैसूर का एक भाक्तिाली राजा था, उसने एक फरमान जारी किया था कि यदि कोई गाय का वध करता हुआ पाया गया तो उसके हाथ काट दिए जायेंगे।***

भारत में यूरोपियन्स के आने से इतिहास का एक नया पृष्ठ आरम्भ हुआ और 1857 के बाद इस देश में अंग्रेजों का राज्य फैल जाने पर सारे देश में गोहत्या होने लगी थी क्योंकि ईसाई स्वभाव से गोमांस भक्षी थे। सेनिकों और शासकों के लिए गोमांस की व्यवस्था की जाने लगी थी। महर्षि दयानन्द के अतिरिक्त महात्मा गांधी,

जमनालाल बजाज, स्वामी करपात्रीजी, ला० हरदेवसहायजी, श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी और श्रीभाई हनुमान प्रसाद पोद्दार आदि अनेक महापुरुषों ने गोरक्षार्थ अथक प्रयास किए थे। गांधीजी ने यहां तक कहा था कि "हम स्वतंत्रता के लिए कुछ समय तक रुक सकते हैं, पर गोहत्या होना हमें एक दिन भी सहन नहीं।"

भारत को अन्तोगत्वा 15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। अब यह समझा जा रहा था कि भारत को स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ ही गौमाता के हत्यारों से गौमाता के प्राणों की रक्षा हो सकेगी, परन्तु यह इस देश का दुर्भाग्य है कि संविधान निर्माण हेतु गठित कमेटी में ही इस पर सर्वसम्मति नहीं बन पाई और गाय के मामले को संविधान की धारा 48 के अन्तर्गत डायरैक्ट प्रिन्सिपल्स के अन्तर्गत रखा गया, जिसमें गोवध का कानून बनाने का अधिकार राज्य सरकारों को दिया गया। आज की स्थिति यह है कि देश के पांच राज्यों–केरल, अरुणाचल प्रदेश, त्रिपुरा, नागालैण्ड और सिक्किम को छोड़ कर शेष समस्त राज्यों में गोवध निषेध कानून लागू है। परन्तु यदा कदा लोगों द्वारा इस कानून का उल्लंघन किया जाना पाया जाता है और आदर्श स्थिति को प्राप्त करना निकट भविष्य में सम्भव नहीं लगता है। केन्द्र सरकार के स्तर पर लोक सभा में समय समय पर बिल प्रस्तुत किए गए हैं और सांसदों ने भी व्यक्तिगत रूप से बिल प्रस्तुत किए, परन्तु किसी को भी सफलता नहीं मिल पाई है। अन्तिम बिल श्री प्रह्लाद सिंह पटेल द्वारा प्रस्तुत किया गया था, जिसके बारे में 26 जुलाई, 2002 को लोक सभा में बहस के बाद यह निर्णय लिया गया था कि सरकार को चाहिए कि सम्पूर्ण देश में गाय और उसके बछड़े की हत्या के निषेध के बारे में एक उचित विधेयक प्रस्तुत करे। इस बारे में आगे क्या कार्यवाही हुई यह ज्ञात नहीं है। निष्कर्ष यह है कि इतने महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर सरकार और जनता दोनों खामोश बैठे हैं और कई तथाकथित गोरक्षक कानून को अपने हाथ में लेकर सड़कों पर डण्डे चला रहे हैं। महर्षि के मन में गोमाता के लिए असीम स्नेह और दया थी, परन्तु उनके अनुयायियों अर्थात् आर्यसमाजियों के एजेण्डे में गोरक्षा का कोई मुद्दा सम्मिलित नहीं है।

जितना हम विचार करते हैं, उतनी ही भारतभूमि पर गोहत्या के होने से उत्पन्न गोमाता की चीत्कार हमारे मन–मष्तिष्क को कुचलते हुए आत्मा तक पीड़ा पहुंचाती है। ऐसा प्रतीत होता है कि हम अपनी आत्मा में कोई बोझ लिए घूम रहे मूक प्राणि हैं। हम देखते हैं कि ईसाई धर्म गोहत्या को पुण्य नहीं बताता है और गोरक्षा करने से इस्लाम के विरुद्ध भी कोई आक्षेप नहीं लगता है। अनेक मुस्लिम विद्वानों,, जिनमें बैरिस्टर मुहम्मद अकबर का नाम अग्रणीय है, कहा है कि हजरत मुहम्मद ने स्वयं भी गोमांस सुरुचि से नहीं खाया और न ही गो–वध करने की इस्लाम में पुष्टि की गई है। मौलाना अब्दुलवहाब, अब्दुलमजीद और काजी सैयद मुहम्मद हुसैन का फतवा यह था कि गो–वध अनिवार्य नहीं है। इसे न करने वाला पापी नहीं होगा। गोरक्षा विवाद करने और भाषणबाजी से सम्भव नहीं है। इसके लिए सभी को मानसिक रूप से तैयार होना होगा। इस देश में सभी जाति, सम्प्रदायों और धर्मों के मानने वाले हम लोग इस मामले में भी विचार कर एकमत प्राप्त कर संविधान में वांछित संशोधन कर सकते हैं और सभी लोगों को प्रेमपूर्वक समझा सकते हैं कि दूसरों की भावनाओं का सम्मान करके ही हम सांमजस्यता और सौहार्द उत्पन्न कर सकते हैं। हम गोमाता की रक्षा के लिए सदा तत्पर रहने का संकल्प लेते हैं।

गोमूत्र में सुवर्ण तो गोदुग्ध में विष क्यों?

—डॉ. धर्मवीर

29 जून 2016 को समाचार पत्रों में यह समाचार प्रमुख रूप से प्रकाशित हुआ है कि अनुसन्धान से सिद्ध हुआ है कि गोमूत्र में सुवर्ण के कण पाये गये हैं। समाचार की मुख्य सूचना इस प्रकार है—

गुजरात के जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के बायो टेक्नोलोजी विभाग के प्रमुख उक्त अनुसंधान करने वाली टीम के अगुवा डॉ. बी.ए. गोलकिया ने बताया कि गुजरात के सौराष्ट्र इलाके के गिर में पाई जाने वाली गायों के मूत्र में प्रति लीटर तीन से दस मिलीग्राम तक सोना, 2 मिलीग्राम चाँदी, 025 मिलीग्राम जस्ता और 1.2 मिलीग्राम बोरॉन होने की पुष्टि हुई है। यही नहीं, इनके अतिरिक्त अन्य 5100 रसायनों की भी पहचान की गई, जिनमें एंटी कैंसर, एंटी कॉलेस्ट्रोल, एंटी डायबिटीज, एंटी एजिंग के गुण वाले रसायन शामिल हैं। ऐसा प्रयोग गायों की अन्य प्रजातियों पर नहीं हुआ है। यह सोना जैविक सोना है, जो चिकित्सकीय गुणों के मामले में लाजवाब तथा आम तौर पर चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होने वाली स्वर्ण भस्म आदि से कहीं आगे है।

इस देश का यह दुर्भाग्य है कि अनुसन्धान में गोमूत्र में सुवर्ण की उपस्थिति प्रमाणित हो रही है, परन्तु आज प्रत्येक व्यक्ति दूध के नाम पर जो पी रहा है, खा रहा है, वह केवल विष है। पहले समय में दूध जब अधिक था, अतिथि का सत्कार दूध से किया जाता था, पानी पिलाना सम्मान के प्रतिकूल समझा जाता था। तब इस देश में गौओं की संख्या मनुष्यों से अधिक थी। जैसे—जैसे हिंसा के कारण, अनुपात घटता गया, परिस्थितियाँ बदलती गईं। दूध माँगने पर भी दूध न मिले, ऐसी दशा में दूध में पानी मिलाकर दिया जाने लगा। दूध में पानी की मिलावट करना, उसे बेचना एक सर्वप्रचलित अपराध बन गया। घर में दूध की मात्रा कम होने पर पानी मिलाकर उसकी पूर्ति करना एक सामान्य आचार बन गया। पशुओं की निरन्तर घटती संख्या ने इस परिस्थिति को बदल दिया। अब दूध में पानी मिलाने के स्थान पर पूरा दूध ही नकली बनने लगा। दूध वाशिंग पाऊडर, तेल आदि डालकर बनाया जाने लगा। एक बार दिल्ली में श्री कृष्णसिंह जी के गाँव में कार्यक्रम में जाते हुए वहाँ के निवासी ने बताया— आचार्य जी, इस गाँव में पशु नहीं हैं, परन्तु हजारों लीटर दूध प्रतिदिन डेयरी को भेजा जाता है। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि ऐसा दूध डेयरी में एक गाँव से लिया जा रहा है, तो क्या शेष लोग मूर्ख हैं जो शुद्ध दूध डेयरी को देंगे? एक बार उत्तर प्रदेश में दिल्ली की ओर आने वाले दूध की जाँच की जाने लगी तो सारे के सारे दूध बेचने वालों ने अपना दूध सड़कों पर फेंक दिया और किसी भी प्रकार के परीक्षण के लिये तैयार नहीं हुए। उस समय समाजवादी नेता और मुख्यमंत्री मुलायमसिंह की टिप्पणी थी— दूध बेचने वालों को भी तो अपने बच्चे पालने हैं, वे मिलावट नहीं करेंगे तो उनके परिवार का भरण—पोषण कैसे

होगा? इस प्रकार दूध में मिलावट ही नहीं, नकली दूध को भी हमने मान्यता दे दी, चाहे ऐसा करने से किसी की भी मृत्यु हो तो हो!

दूध की कमी को पूरा करने के लिये बाजार में सोयाबीन और मूंगफली का दूध बनाकर बेचा जाने लगा। सोयाबीन और मूंगफली का घोल दूध जैसा दिखता है, तो कुछ गुण भी मिलते हैं, परन्तु वह घोल क्या दूध का स्थान ले सकता है? इधर हमारा अनुसन्धान विपरीत दिशा में बढ़ता ही जा रहा है। दूध का आधार पशु बढ़ाने के स्थान पर पशु को समाप्त कर दूध के विकल्प खोज रहे हैं। पशु बढ़ाने के स्थान पर पशु में दूध की मात्रा बढ़ाने की बात करते हैं। पशु से अधिक दूध प्राप्त करने के लिये पशुओं पर तरह–तरह के अत्याचार करते हैं। दूध के लिये पशुओं को इंजेक्शन लगाते हैं, यह बिना सोचे कि इसका पशु पर और दूध पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यह एक कष्ट व पीड़ा देने वाला उपाय है। इस औषध का उपयोग प्रसव शीघ्र कराने के लिये किया जाता है। इसके लगाने से गर्भाशय में संकोच होकर शीघ्र प्रसव होता है। इस इंजेक्शन के लगाने से पशु में प्रसव पीड़ा होती है बिना सोचे दिन में दो बार पशुओं को यह इंजेक्शन लगाते हैं।

इस दवा का यदि पशु पर प्रभाव पड़ता है तो दूध पर भी पड़ता है, दूध में इसके प्रभाव से जो बच्चे ऐसा दूध पीते हैं, उनके अन्दर वयस्कता का भाव जल्दी प्रकट होने लगता है। जो बच्चे 15–16 वर्ष में बड़े लगते थे, उनमें यह परिस्थिति 10–12 वर्ष में ही दिखाई देने लगती है। ऐसा दूध, दूध के प्राकृतिक गुणों से रहित हो जाता है। हम दूध अधिक लेने के लिये गाय–भैंस के बच्चों को मार देते हैं तथा कई लोग उनके अन्दर भूसा भर देते हैं। जब दूध निकालना होता है, तब उसे पशु के सामने रख देते हें, पशु उसे चाटता हे और आप सरलता से दूध निकाल लेते हैं। यह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये किया जाने वाला पाप है।

हमारे समाज में दूध की आवश्यकता तो बढ़ रही है, परन्तु दूध का स्रोत घट रहा है, ऐसी परिस्थिति में अपराध ही शरण बन जाता है। चोरी और मिलावट तभी होती है, जब वस्तु दुर्लभ हो। आज कोई व्यक्ति कितने भी पैसे देकर शुद्ध घी–दूध प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसके अपने पशु न हों। हमें दूध, दही, मक्खन, पनीर, मावा, मिठाई, घी–सब कुछ चाहिए, परन्तु गाय नहीं चाहिए, तब ऊपर बताये सब विकल्प ही काम आयेंगे। गत दिनों मध्य प्रदेश के एक गाँव में जाने का अवसर मिला, वहाँ एक व्यक्ति भट्टी जलाकर मावा बना रहा था। हमने सोचा–अच्छा मावा मिलेगा, ले चलते हैं। भट्टी के पास जाकर बैठे, तो एक व्यक्ति चम्मच से डालडा दूध में मिला रहा था। पूछने पर पता लगा कि पहले यह व्यक्ति गाँव से दूध लाता है, उसकी क्रीम निकाल कर घी बनाता है, फिर बचे हुए दूध में वनस्पति तेल डालकर मावा बनाता है। आज जितने भी उपाय जिसको आते हैं, उतने उपायों से दूध और खाद्य पदार्थ बनाये जा रहे हें। इसमें भारत हो या विदेश, गरीब हो या अमीर, गाँव हो या शहर, किसी की कोई भी सीमा नहीं है। जितना अपराध नगर में होता है, उससे कम ग्राम में नहीं होता। जितना हमारे देश के अन्दर दूध में मिलावट का पाप हो रहा है, उससे अधिक यूरोप अमेरिका आदि के नगरों में किया जा रहा है। **वहाँ अपराध करने का प्रकार वैज्ञानिक**

साधनों से साफ–सुथरा, आधुनिक है। हमारे देश में दूध में मिलावट करते हैं, उन्होंने गाय में ही मिलावट कर दी।

आज बड़ी–बड़ी विदेशी कम्पनियों का दूध और दूध का चूर्ण विष के अतिरिक्त कुछ नहीं है। भारत की सभी डेयरियाँ दूध की मात्रा को पूर्ण करने के लिये इसी दुग्ध चूर्ण का उपयोग करती हैं। यूरोप के लोगों ने दूध के लिये नई गाय बना डाली, इन गायों को हम जर्सी, रेड डेन, हेलिस्टन आदि के नाम से जानते हैं। इनसे प्राप्त होने वाले दूध की मात्रा ने हमें पागल बना दिया है। हम अपनी गिर, राठी, साहीवाल, नागौरी, थारपारकर आदि सैकड़ों देसी नस्ल को छोड़कर विदेशी गायों को ले आये। उनके बीच से अपनी गायों को संकर नस्ल का बना लिया। आज जब विदेशों में अनुसन्धान किया गया, तो पता चला कि हम ठगे गये। विदेशी गायों के दूध से मधुमेह, कैंसर घुटने का दर्द जैसी अनेक बीमारियाँ हमारे समाज में बढ़ रही हैं, परन्तु विदेशी कम्पनियों का अरबों–खरबों का व्यापार दूध, दूध के पाउडर, घी तथा दुग्ध उत्पादों का है, वे इस पाप को न रोकना चाहते हैं, न प्रकाशित होने देना चाहते हैं। वास्तव में गाय जैसा दिखने वाला विदेशी पशु अमेरिका में पाये जाने वाले जंगली सूअर और युरास नामक पशु के प्रजनन से अधिक दूध और अधिक मांस प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिक द्वारा बनाई गई एक नई प्रजाति है। इसके कारण इस मांस और दूध का सेवन करने वाले चाहे अमेरिकी हों या भारतीय, सभी में घातक रोग बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं।

आजकल जहाँ यह पशु है, उन देशों ने भी इन पशुओं के दूध को पीना छोड़ दिया है और वहाँ के लोग इसे सफेद जहर मानने लगे हैं। वहाँ के लोग मांस के लिये भी भारतीय गाय को ही पसन्द करते हैं, इस कारण भारत विश्व का सबसे बड़ा गो–मांस निर्यात करने वाला देश बन गया है। दूध के लिये जर्मनी, ब्राजील जैसे देशों ने भारत की गिर गाय को बहुत वर्षों पहले से ले जाना प्रारम्भ किया था। आज वहाँ बड़ी संख्या में इनका पालन किया जाता है। आज वहाँ इन देसी गायों का मूल्य एक करोड़ रुपये प्रति गाय तक पहुँच गया है। हम अपने पशु और अपने मनुष्यों के स्वास्थ्य का मूल्य नहीं समझते हैं, अतः हम विदेशी गायों के प्रति मोह रखते हैं, उनके दूध से अपने अन्दर कैंसर, मधुमेह, घुटनों के दर्द जैसे रोगों को आमन्त्रण दे रहे हैं। हम मांस के लिये सोना देने वाली गाय को मार रहे हैं।

आज हमें विचार करने की आवश्यकता है कि केवल दूध की मात्रा का लोभ करने से समस्या का हल नहीं होगा। इसके मूल में जाकर इस समस्या का हल करना होगा, नहीं तो महर्षि दयानन्द का यह वाक्य सार्थक होगा–गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश होता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु सात सौ वर्ष पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दस गुने मूल्य से भी नहीं मिल सकते, क्योंकि सात सौ वर्षों में इस देश में गौ आदि पशु को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़–मांस तक भी नहीं छोड़ते, **नष्टे**

मूले नैव फलं न पुष्पम्। जब कारण का नाश कर दे तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे। हे मांसाहारियों! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं?

हम जहाँ पशुओं को मारकर दूध बढ़ाने के उपाय कर रहे हैं, उसी प्रकार उपजाऊ भूमि को घटाकर अन्न बढ़ाने का उपाय भी कर रहे हैं, यह गणित उल्टा पड़ेगा। अन्न भी नकली और बीमार मिलेगा, दूध भी नकली और रोगकारक ही प्राप्त होगा। इन दोनों समस्याओं का हल हमारी प्राचीन परम्परा में निहित है। उसका हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है। पुराने समय में जंगलों की सुरक्षा अनिवार्य थी। नगर–ग्राम के समीप जो जंगल होने से पशुओं की सुरक्षा और वृद्धि सहज सम्भव है, वहीं जंगल के कारण वनस्पतियों की प्राप्ति से दूध में औषधीय गुण प्राकृतिक रूप में सहज प्राप्त होते हैं। गाय आदि पालतू पशुओं के अतिरिक्त जंगली पशु–पक्षियों की भी सहज रक्षा हो जाती है। जंगल में घूमने वाली गायों के दूध से आरोग्य, बल बुद्धि, पराक्रम आदि सद्गुण मनुष्यों में बढ़ते हैं। पशु–पक्षियों की अधिकता से जंगल में गोमूत्र–गोबर आदि से भूमि को पर्याप्त खाद मिलने से वृक्ष–वनस्पतियों की वृद्धि होती है। वृक्षों की अधिकता से वर्षा, जलवायु की शुद्धता तथा उष्णता की मात्रा भी कम होकर वातावरण सौम्य बनता है। इसका दूसरा लाभ भी होता है। दूध–घी की मात्रा अधिक होने से गरीब–से–गरीब आदमी को भी उचित पौष्टिक भोजन मिलता है तथा दूध–घी का उपयोग करने वाले व्यक्ति को अन्न खाने की कम ही आवश्यकता पड़ती है। इससे मल मूत्र, दुर्गन्ध भी न्यून होकर पर्यावरण की शुद्धि होती है। रोग कम होते हैं। दुर्गन्ध कम रहने से वायु व वृष्टि–जल की शुद्धि बनी रहती है।

आज हम दूध की कमी को अन्न से पूर्ण करना चाहते हैं। मांस को अन्न का विकल्प मान बैठे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि मांस खाने वाला व्यक्ति अन्न भी अधिक खाता है। अधिक अन्न से रोग बढ़ते हैं। मांस खाने वाले लोग पशुओं को समाप्त कर देंगे तो दूध तो समाप्त होगा ही, मनुष्य की प्रकृति मांसाहारी होकर मनुष्य का मांस खाने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। इस सबका उपाय गो–संवर्धन है। जब तक मनुष्यों के पास अधिक गायें नहीं होगी, तब तक समस्या का हल नहीं होगा। पशु–पक्षी अधिक हों, इसलिये परमेश्वर ने जंगल अधिक बनाये हैं। ईश्वर की सृष्टि में मनुष्यों से अधिक पशु–पक्षी आदि अधिक रहने से ही मनुष्यों का कल्याण सम्भव है। इनके लिये भोजन की व्यवस्था परमेश्वर ने प्राकृतिक रूप से की है। घास, वृक्ष, फल–फूल, पशु–पक्षियों के लिये बनाये हैं। सारी वनस्पतियाँ स्वयं उत्पन्न होती हैं। परमेश्वर ने पशु–पक्षियों की मात्रा मनुष्य के भोजन से अधिक बनाई है। पशु–पक्षियों को भोजन के लिये खेत नहीं जोतना–बोना पड़ता, इसलिये प्रकृति में इनका अधिक होना मनुष्य के हित में है। परमेश्वर के नियम के विपरीत चलकर हम कभी सुखी नहीं रह सकते। अतः वेद ने कहा है–**यजमानस्य पशून् पाहि।।**

–जुलाई 2016 परोपकारी अंक से साभार

‘अक्तूबर मास के पर्व और महापुरुषों की जयन्तियां’

—मनमोहन कुमार आर्य

अक्तूबर, 2016 माह में अनेक पर्व व जयन्तियां पड़ रही हैं। जयन्तियों में वीर हनुमान, महर्षि बाल्मीकि, ऋषि धनवन्तरी, गांधी जी और लाल बहादुर शास्त्री जी सम्मिलित हैं वहीं पर्वों में विजयादशमी, दीपावली, ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस एवं गोवर्धन पूजा सम्मिलित हैं। इस अवसर पर हम कुछ चर्चा सभी जयन्तियों व पर्वों की करना उचित समझते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी के अनन्य भक्त वीर ब्रह्मचारी हनुमान जी से हम चर्चा आरम्भ करते हैं।

श्री हनुमान जयन्ती (कार्तिक कृष्ण 14 तदनुसार 29 अक्तूबर 2016) वीर हनुमान जी रामायणकाल में माता अंजनी देवी एवं पिता पवन कुमार के पुत्र थे। रामायण काल वैदिक काल के अन्तर्गत आता है, जब सर्वत्र वेद की शिक्षाओं के आधार पर देश व समाज की व्यवस्थायें चलती थीं। वैदिक मान्यताओं पर आधारित गुरुकुलीय शिक्षा प्राप्त कर ही हनुमान जी का जीवन व चरित्र निर्मित हुआ था। आप संस्कृत भाषा के भी धुरन्धर विद्वान थे जिसका प्रमाण स्वयं श्री रामचन्द्र जी हैं। उन्होंने लक्ष्मण जी को कहा था कि हनुमान जी से उनका जो वार्तालाप हुआ उसमें हनुमान जी ने संस्कृत बोलने में व्याकरण की एक भी भूल वा अशुद्धि नहीं की। इससे यह भी ज्ञात होता है कि हनुमान जी वेदों व वैदिक साहित्य के भी पूर्ण ज्ञानी थे जैसे कि 191 वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द जी हुए हैं। हनुमान जी ने सारा जीवन सबसे कठोर व्रत ब्रह्मचर्य का पालन कर एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है और इस व्रत की शक्ति से अपूर्व कार्य सिद्ध किये जो बड़े–बड़े बुद्धिमान व बलवान भी नहीं कर सकते। उनका शरीर वज्र के समान कठोर व बलवान था इसलिए उनका एक नाम बजरंगबली भी है। मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी अपने समय के आदर्श महापुरुष थे। उनको आपने अपना स्वामी, आदर्श व प्रेरक स्वीकार किया। इन दोनों महान व्यक्तियों ने मिलकर संसार में अद्वितीय ऐतिहासिक कार्य कर एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है। राम–रावण युद्ध में जहां श्री रामचन्द्र जी व उनके अनेक सहयोगियों भाई लक्ष्मण, सुग्रीव, अंगद आदि का मुख्य स्थान है, वहीं हमारी दृष्टि में राम के बाद युद्ध में श्री रामचन्द्रजी को विजय दिलाने में हनुमान जी की मुख्य भूमिका रही है। माता सीता जी की खोज भी उनका एक ऐसा कार्य है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम है। समुद्र पार कर उनके द्वारा लंका पहुंचना एक चमत्कार से कम नहीं है। आज हम नहीं जान सकते कि वह लंका कैसे गये होंगे। समुद्र पार कर लंका जाने के दो ही मार्ग थे, प्रथम जल मार्ग से नाव व जलयान का उपयोग कर वहां

पहुंचना और दूसरा वायुमार्ग से किसी वायु यान से जाना। हमें लगता है कि इन दोनों में से किसी एक मार्ग का ही उपयोग हनुमान जी ने लंका पहुंचने के लिए किया होगा। रावण के दरबार में जाकर उसे श्री रामचन्द्र जी का सन्देश सुनाना, माता सीता से मिलना व उन्हें आश्वस्त करने के साथ अपना प्रयोजन पूरा कर सकुशल श्रीरामचन्द्र जी के पास लौट आना भी उन्हें एक अद्भुद योद्धा व महाप्रज्ञ सिद्ध करते हैं। यह भी एक प्रकार से रावण की पराजय ही थी। ऐसे अनेकों अद्भुत कार्य हनुमान जी ने किये। श्री हनुमान जी का जीवन चरित जानने के लिए महात्मा प्रेमभिक्षु जी द्वारा लिखित श्री हमुन्नचरित का अध्ययन उपयोगी है। श्री हनुमान जयन्ती पर उन्हें सश्रद्ध श्रद्धांजलि।

महर्षि बाल्मीकि जयन्ती (आश्विन शुक्ल पूर्णिमा तदनुसार 16–10–2016) महर्षि बाल्मीकि संस्कृत रामायण महाकाव्य के प्रणेता व रचयिता हैं। इस ग्रन्थ में उन्होंने अपने समकालीन राजा दशरथ के पुत्र श्री रामचन्द्र जी के यथार्थ जीवन का ऐतिहासिक दृष्टिकोण रखते हुए चरित्र चित्रण किया है। त्रेतायुग में घटी यह घटना प्राचीनता की दृष्टि से द्वापर युग की कुल अवधि 8.64 लाख वर्ष से भी कहीं अधिक पुरानी है। इस लम्बी अवधि में इस रामायण ग्रन्थ में अनेक प्रक्षेप हुए हैं जिससे इसमें कुछ वैदिक मान्यताओं के विरुद्ध प्रसंग भी आ गये हैं। यह जानने योग्य है कि महर्षि बाल्मीकि जी एक ऋषि थे। ऋषि वह होता है जो वेदों का पूर्ण ज्ञानी व ईश्वर भक्त योगी हो। रामायण का प्रणयन उन्होंने श्री रामचन्द्र जी को ईश्वर व उसका अवतार मानकर नहीं अपितु एक आदर्श महापुरुष और मर्यादा पुरुषोत्तम मानकर किया है और यह भी तथ्य है कि रामायण प्राचीन व अर्वाचीन अन्य काव्यों की तरह का काव्य न होकर इतिहास है जिसकी प्रत्येक घटना सत्य एवं तथ्यपूर्ण है। बाल्मीकि जी के जीवन के बारे में अनेक किंवदन्तियां प्रचलित हैं परन्तु वह सब कपोल कल्पित प्रतीत होती हैं। महर्षि बाल्मीकि के समय गुण–कर्म–स्वभावानुसार वैदिक वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। जन्मना जाति व्यवस्था का प्रचलन आज से 2–3 हजार वर्ष पूर्व मध्यकाल में हुआ है। इस दृष्टि से हमें लगता है कि महर्षि बाल्मीकि जी की आयु के प्रथम लगभग 25 वर्ष अपने माता–पिता व परिवार के साथ एवं गुरुकुल में विद्याध्ययन में व्यतीत हुए होंगे और उसके बाद विवेक व वैराग्य होने के कारण उन्होंने संन्यास लेकर किसी वन में अपना आश्रम बनाया था। वहां उन्होंने ईश्वरभक्ति, उपासना व स्वाध्याय आदि के बल पर संस्कृत में काव्य लेखन की योग्यता अर्जित की और अपने व्यक्तित्व के अनुरुप उस समय के आदर्श महापुरुष मर्यादा पुरुषोत्तम राम का उनके यथार्थ व्यक्तित्व के अनुरुप काव्यमय जीवनचरित रचा। यह कार्य करके उन्होंने न केवल श्री रामचन्द्र जी को अमर कर दिया अपितु उनके साथ वह स्वयं भी अमर हैं। यहां हमें इस बात से दुःख होता है कि महर्षि बाल्मीकि जी का जैसा महान व्यक्तित्व व कृतित्व है, हमारा पौराणिक समाज उन्हें उसके अनुरुप आदर व सम्मान नहीं देता। पौराणिक समाज व उसके नेताओं ने बाल्मीकि जी का उचित मूल्यांकन नहीं किया और न पौराणिक जनता ही ऐसा कर पाई। बाल्मीकि रामायण की रचना कर उन्होंने अपनी उस प्रतिभा का परिचय दिया जो लाखों व करोड़ों में किसी एक

दो व्यक्तियों में ही होती है। इस कारण सभी आर्य–हिन्दू सन्तानें उनकी ऋणी हैं। बाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर हम उन्हें सश्रद्ध स्मरण करते हैं और विद्वानों से निवेदन करते हैं कि अन्य पूज्य धार्मिक महापुरुषों के समान ही वैदिक विधि से उनकी जयन्ती का पर्व मनाया जाया करे।

धनवंतरी जयन्ती (कार्तिक कृष्ण 13 तदनुसार 28–10–2016)– आचार्य व ऋषि धनवंतरी जी शरीर के प्रायः सभी रोगों के चिकित्सक थे। आयुर्वेद के विकास व उन्नति में उनका विशेष योगदान था। आपने व आपके शिष्य सुश्रुत ने औषधि चिकित्सा और शल्य चिकित्सा में विशेष उन्नति की थी। चरक व सुश्रुत आयुर्वेद चिकित्सा के प्रमुख ग्रन्थ है जिसमें ऋषि धनवन्तरी जी का भी गौरवपूर्ण योगदान है। इनके विषय में पुराणों में अनेक अविश्वसनीय कथायें हैं। धनवंतरी जयन्ती के शुभ अवसर पर इनको स्मरण कर आयुर्वेद का यथाशक्ति अध्ययन कर इससे स्वयं और दूसरों को लाभ पहुंचाने की प्रेरणा लेनी चाहिये। हम ऐसे महापुरुषों के प्रति जितने कृतज्ञ होंगे उतने ही हम गुणग्राही व जीवन–उन्नत होंगे।

गोवर्धन पूजा (दिनांक 31–10–2017)– गोवर्धन पूजा गाय के उपकारों को स्मरण कर इस दिन गोसंवर्धन के उपायों पर विचार व निर्णय करने का दिन है जो न केवल व्यक्तिगत स्तर अपितु राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक रूप में भी आयोजित किये जाने चाहिये। इस अवसर पर गाय से मनुष्यों को होने वाले लाभों पर विचार कर उसके संवर्धन व रक्षा पर ध्यान दिया जाना चाहिये। गोदुग्ध व उससे प्राप्त होने वाले सभी पदार्थ अमृत के समान हैं जिसका धन की दृष्टि से मूल्याकंन नहीं किया जा सकता। गो से मिलने वाले पदार्थ व गाय अनमोल है। गोसेवा से मनुष्य का इहलोक व परलोक सुधरता है। इहलोक में स्वास्थ्य, आरोग्य, रोगनिवारण, बलवृद्धि, बुद्धिवृद्धि, आलस्यत्याग, पुरुषार्थ प्रेरणा, लोकोपकार आदि नाना लाभ होते हैं व प्रेरणायें मिलती है। गायों के प्रति सभी प्रकार की हिंसा बन्द होनी चाहिये। गोहत्या व राष्ट्र–हत्या दोनों पर्याय हैं। इसी प्रकार गोरक्षा से राष्ट्र रक्षित होता है। गाय पर्यावरण संरक्षण में भी सहायक है। गाय के गोबर से बनने वाली खाद सर्वोत्तम खाद है जिससे उत्पन्न खाद्यान्न से मनुष्य का शरीर स्वस्थ, निरोग व बलिष्ठ होता है व बुद्धि ज्ञान से सम्पन्न होती है। महर्षि दयानन्द ने गोरक्षा से सम्बन्धित 'गोकरुणानिधि' एक अत्यन्त महत्ववूर्ण पुस्तक लिखी है जिसमे गोपालन से भौतिक व आर्थिक लाभों का वर्णन भी किया गया है। पं. प्रकाशवीर शास्त्री जी की पुस्तक 'गो हत्या राष्ट्र हत्या' तथा मेहता जैमिनी जी की पुस्तक 'गोमाता विश्व की प्राणदाता' विशेष रूप से पठनीय हैं। गोवर्धन पूजा पर्व के दिन हमें गोसेवा, गोरक्षा की प्रतिज्ञा लेने के साथ विशेष यज्ञ कर ईश्वर से इन उद्देश्यों की पूर्ति में सहायता की मांग करनी चाहिये और गोसेवा विषयक साहित्य का अध्ययन व वाचन करना चाहिये।

विजयादशमी पर्व (आश्विन शुक्ल दशमी वा 11–10–2016) भारतीय वैदिक धर्म व संस्कृति वेदों पर आधारित है जिसमें गुण–कर्म–स्वभाव के अनुसार वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी। विजया दशमी मुख्यतः क्षत्रियों का पर्व है परन्तु समाज के सभी वर्गों द्वारा इसे प्रीतिपूर्वक मनाया जाता है। यह पर्व मनुष्य को अधर्म छोड़ने व धर्म पारायण बनने की प्रेरणा देने के लिए आरम्भ किया गया प्रतीत होता है।

इस पर्व के दिन क्षत्रियों को अपने कर्तव्यों पर विचार कर यह देखना होता है कि क्या वह अपने कर्तव्यों का भलीभांति पालन कर रहे हैं अथवा नहीं?इस दिन क्षत्रियों व अन्यों को भी विद्वानों की संगति कर उनसे अपने कर्तव्यों पर प्रेरक प्रवचन भी सुनने चाहिये और विशेष वैदिक यज्ञ करके इस पर्व को मनाना चाहिये। देशों की सरकारें इस अवसर पर अपने देश की सीमाओं व पड़ोसी देशों के व्यवहार सहित अपनी रक्षा तैयारियों की समीक्षा कर सकती हैं। आजकल विजयादशमी पर अनेक मिथ्या प्रथायें भी प्रचलित हो गई हैं। ऐसी जो प्रथायें अनावश्यक व अलाभकारी हैं, उन्हें छोड़ना व देश, काल व परिस्थितियों के अनुसार नई प्रथाओं व परम्पराओं का शुभारम्भ भी किया जाना चाहिये। अवैदिक प्रथायें जिसमें पशु हिंसा आदि की जाती हैं वह सर्वथा बन्द होनी चाहियें। ईश्वर ने मनुष्य को शाकाहारी प्राणी बनाया है। हाथी व घोड़े भी शाकाहारी प्राणी हैं तथापि इनमें बल की मात्रा इतर अनेक हिंस्र पशुओं से अधिक होती है और यह मनुष्य समाज के लिए उपयोगी भी होते हैं। हमें लगता है कि इस दिन मांसाहारियों को मांस व मदिरा सहित अन्याय, अत्याचार व अधर्म छोड़ने की प्रतिज्ञा, व्रत व संकल्प भी लेना चाहिये। यहां यह भी स्पष्ट कर दें कि श्री रामचन्द्र जी ने रावण का वध विजयादशमी के दिन नहीं किया था। यह बाल्मीकि रामायण में उपलब्ध विवरण से पुष्ट नहीं है। हां, यदि इस दिवस को अधर्म पर धर्म की विजय के रूप में मनाते हैं तो इमें कुछ अनुपयुक्त नहीं है परन्तु इसके अनुरूप हमारी भावना का होना व इसके अनुरुप भावी जीवन को बनाने पर अवश्य विचार करना चाहिये।

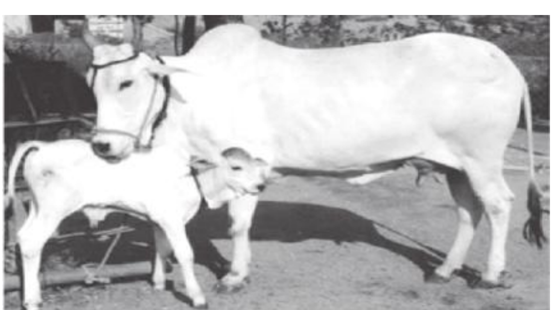

लालबहादुर शास्त्री जयन्ती (2 अक्तूबर)– देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी का भी जन्म दिवस है। वह एक साधारण परिवार में जन्में और अपने गुणों व योग्यता के कारण प्रधानमंत्री बने। उन्होंने अपने जीवन में अनेक कष्ट सहे। पिता का साया उनके सिर से बचपन में ही उठ चुका था। पैसे न होने के कारण उन्हें नदी में तैर कर स्कूल जाना पड़ता था। देश की आजादी के लिए वह अनेक बार जेल भी गये। उन्होंने देश के लिए सत्य, त्याग व ईमानदारी की जो मिसाल कायम की उसके कारण वह देशभक्त नागरिकों के सदा आदरणीय एवं पूज्य रहेंगे। सन् 1965 में भारत–पाक युद्ध में उनके नेतृत्व में भारत को विजय मिली। उनका दिया नारा 'जय जवान जय किसान' आज भी कानों में गूंजता है। देश में अन्न संकट होने पर उन्होंने देशवासियों को एक दिन एक समय का उपवास कर अन्न बचाने का आह्वान किया जिसका उन्होंने स्वयं पालन किया व देशवासियों ने भी किया। उन दिनों उपवास के दिन मध्यान्ह में सभी होटल आदि बंद रहते थे और कोई भोजन नहीं करता था। उनका जीवन प्रायः आदर्श जीवन है। उनकी जयन्ती पर हम उनके सभी अच्छे कार्यों के लिए अपनी श्रद्धांजलि देते हैं। अक्तूबर, मास की जयन्ती व पर्वों पर हमने संक्षेप में अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। पाठकों को यदि यह संक्षिप्त लेख पसन्द आता है तो हमारा इन पंक्तियों को प्रस्तुत करना सार्थक होगा।

आर्य समाज का पहला नियम

—प्रोफेसर रत्न सिंह

सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है। इस नियम के तीन भाग हैं—

1. सब सत्यविद्या, 2. विद्या (सत्यविद्या) से जो पदार्थ जाने जाते हैं, 3. परमेश्वर उन सबका, अर्थात् सत्यविद्या और उससे जिन पदार्थों का बोध होता है, आदिमूल है। यहाँ सत्यविद्या पदार्थ तथा आदिमूल पदों के अर्थ विचारणीय हैं, यतः ये दसों नियम महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित हैं, अतः उक्त पदों का वही अर्थ ग्राह्य है, जो उन्होंने अपने ग्रन्थों ने किया है। सर्वप्रथम 'विद्या' शब्द के अर्थ पर विचार किया जाता है। इस शब्द के अर्थ ये हैं—

''जिससे ईश्वर से लेके पृथिवीपर्यन्त पदार्थों का सत्य विज्ञान होकर, उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है।'' —आर्योद्देश्यरत्नमाला, सं० 16

''जिससे पदार्थ को यथावत् जानकर न्याययुक्त कर्म किये जावें वह 'विद्या' और जिससे किसी पदार्थ का यथावत् ज्ञान न होकर अन्यायरूप कर्म किये जाएँ वह 'अविद्या' कहलाती है।'' —व्यवहारभानुः

''जिससे पदार्थों का यथार्थस्वरूप बोध होवे वह विद्या कहलाती है।''—सत्यार्थप्रकाश, समु० 9

इन उद्धरणों का सार यही है कि 'विद्या' वह है जिससे संसार के समस्त पदार्थों, चेतन व अचेतन दोनों का यथार्थ ज्ञान प्राप्त होता है। प्रायः लोक में विद्या का प्रयोग भिन्न अर्थ में भी किया जाता है। जेब काटने व धोखा देने की कला को भी विद्या कहा जाता है। जादू, टोना व दूसरों को ठगना भी 'विद्या' है। क्या परमेश्वर इस प्रकार की विद्याओं का भी आदिमूल है? यदि उक्त नियम में केवल विद्या शब्द का ही प्रयोग किया जाता तो कुछ व्यक्ति इस प्रकार की शंका कर सकते थे, यद्यपि यह शंका बहुत उथली है। महर्षि दयानन्द जी ने विद्या शब्द से पूर्व सत्य विशेषण रखकर इस प्रकार की शंका के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी। वैसे यदि गहन दृष्टि से देखा जाए तो महर्षि की दृष्टि में 'विद्या' और 'सत्यविद्या' में कोई अन्तर नहीं है, किन्तु फिर भी नियम के भाव को अधिक स्पष्ट करने के लिए यहाँ 'सत्यविद्या' पद का प्रयोग किया गया है।

अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि सत्यविद्या किसे कहते हैं? सत्यविद्या उसे कहते हैं जो तीन काल में एकरस रहती है, जिसका विकास या ह्रास, अर्थात् उन्नति या अधोगति नहीं होती। यह अपरिवर्तनशील, नित्य व शाश्वत होती है, जैसे दो और दो का योग सदैव चार होता है। किसी भी काल में इसके योग में ह्रास व वृद्धि सम्भव नहीं। इस दृष्टि से मनुष्य के ज्ञान को सत्यविद्या की संज्ञा नहीं दी जा सकती, क्योंकि उसका ज्ञान परिवर्तनशील है, उसमें उन्नति व अधोगति होती रहती है, अतः स्पष्ट है कि ईश्वरीय ज्ञान को ही सत्यविद्या कहा जा सकता है और उसी ज्ञान को वेद नाम से पुकारा जाता है। इस धारणा की पुष्टि तृतीय नियम से होती है। वहाँ लिखा है कि— ''वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।'' इस प्रकार प्रस्तुत नियम में प्रयुक्त 'सत्यविद्या' पद का अर्थ हुआ 'वेद'। सत्यविद्या

से पूर्व विशेषणरूप में सब पद रखा हुआ है, अतः 'सब सत्यविद्या' पद का अभिप्राय हुआ 'सब वेद', अर्थात् चारों वेद।

नियम का दूसरा भाग इस प्रकार है– ''जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं।'' इसका अर्थ हुआ कि 'वेद' से जिन–जिन पदार्थों का ज्ञान होता है। वेद का प्रतिपाद्य विषय क्या है, इसकी व्याख्या तृतीय नियम में की जाएगी। यहाँ पदार्थ पद का अर्थ विचारणीय है। तर्क–कौमुदी के अनुसार 'अभिधेयाः पदार्थाः', अर्थात् शब्द द्वारा व्यक्त किसी भी वस्तु को पदार्थ कहते हैं। इस अर्थ में संसार की सभी ज्ञेय वस्तुओं को पदार्थ कह सकते हैं। पदार्थों का वर्गीकरण करते हुए वैशेषिक दर्शन में छह पदार्थ माने गये हैं, जिनके नाम ये हैं–द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय। बाद में चलकर अभाव को भी सातवाँ पदार्थ मान लिया गया है। द्रव्य के 9 भेद हैं, जो इस प्रकार हैं–पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, काल दिग्, आत्मा (जीवात्मा व परमात्मा) तथा मन। सत्यार्थप्रकाश अष्टमसमुल्लास में महर्षि दयानन्दजी ने परमेश्वर व जीवन के साथ ही काल और आकाश को भी अनादि माना है। अनादि पदार्थ कार्यरूप में परिणत न होने के कारण अपने निमित्तकारण की अपेक्षा नहीं रखते। यदि प्रस्तुत नियम में पदार्थ पद का प्रयोग उक्त अर्थ में किया जाए तो यह मानना पड़ेगा कि ईश्वर अपना स्वयं का तथा जीवात्मा, काल व आकाश का निमित्तकारण है, अर्थात् वह इन सबको उत्पन्न करता है, किन्तु यह आशय महर्षि के सिद्धान्त के विरुद्ध है, अतः पदार्थ पद का अर्थ यहाँ पर कार्यजगत् करना ही समीचीन है, क्योंकि किसी शब्द का अर्थ प्रकरण और लेखक के आशय को लेकर किया जाता है।

नियम के तीसरे भाग में कहा गया है कि उन सबका, अर्थात् वेद और कार्यजगत् का परमेश्वर आदिमूल है। आदि का अर्थ है– जिसके पूर्व और परे कुछ न हो। मूल का अर्थ है कारण। सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास में सांख्यदर्शन के ''मूले मूलाभावाद–मूलं मूलम्'' सूत्र के अर्थ में महर्षि ने लिखा है कि– 'मूल का मूल', अर्थात् 'कारण का कारण नहीं होता।' इस अर्थ के आधार पर आदिमूल का अर्थ हुआ आदिकारण। सत्यार्थप्रकाश के इस प्रकरण में आदिकारण का अर्थ प्रकृति किया गया है। इस आधार पर कुछ विद्वान् बिना गम्भीरता से विचार किये प्रस्तुत नियम में प्रयुक्त आदिमूल शब्द का अर्थ प्रकृति लेकर इस नियम का यह अर्थ करने का प्रयत्न करते हैं कि परमेश्वर इस जगत् का उपादानकारण है, क्योंकि आदिमूल का अर्थ है प्रकृति और प्रकृति है जगत् का उपादानकारण। उनकी दृष्टि में आदिमूल का अर्थ उपादानकारण है, परन्तु यह व्याख्या सर्वथा अनुचित है और महर्षि के मन्तव्य के सर्वथा विरुद्ध। सत्यार्थप्रकाश अष्टमसमुल्लास में महर्षि ने प्रश्नोत्तररूप में इस विषय का विवेचन इस प्रकार किया है–

प्रश्न– जगत् के कारण कितने होते हैं?

उत्तर– तीन–एक निमित्त, दूसरा उपादान, तीसरा साधारण। निमित्तकारण उसको कहते हैं कि जिसके बनाने से कुछ बने, न बनाने से न बने। आप स्वयं बने नहीं, दूसरे को प्रकारान्तर बना देवे। दूसरा उपादानकारण उसको कहते हैं, जिसके बिना कुछ न बने वही अवस्थान्तररूप होके बने और बिगड़े भी। तीसरा साधारण कारण उसको कहते हैं कि जो बनाने में साधन और साधारण निमित्त हो। निमित्त कारण दो प्रकार के हैं। एक, सब सृष्टि

को कारण से बनाने, धारने और प्रलय करने तथा सबकी व्यवस्था रखने वाला मुख्य निमित्त कारण परमात्मा। दूसरा, परमेश्वर की सृष्टि में से पदार्थों को लेकर अनेकविध कार्यान्तर बनाने वाला साधारण जीव। उपादान कारण, प्रकृति, परमाणु जिसको सब संसार के बनाने की सामग्री कहते हैं।

इस उदाहरण से स्पष्ट है कि महर्षि के मन्तव्यानुसार ईश्वर जगत् का निमित्तकारण है, उपादानकारण नहीं। नवीन वेदान्ती लोग मकड़ी का उदाहरण देकर ब्रह्म को जगत् का उपादानकारण सिद्ध करते हैं। उनका विचार है कि जिस प्रकार बिना किसी बाह्य सामग्री की सहायता लिये अपने भीतर से तन्तु निकालकर मकड़ी जाला बना लेती है, उसी प्रकार ब्रह्म अपने में से जगत् को बना आप जगदाकार हो जाता है। इस मत के खण्डन में महर्षि का कथन है कि–''जो तुम्हारे कहने के अनुसार जगत् का उपादानकारण ब्रह्म होवे तो वह परिणामी, अवस्थान्तरयुक्त, विकारी हो जावे और उपादानकारण के गुण–कर्म–स्वभाव कार्य में भी आते हैं।'' ब्रह्म चेतन है, इसलिए पृथिव्यादि कार्य भी चेतन होने चाहिए, किन्तु ऐसा देखने में नहीं आता। इसका कारण यही है कि ईश्वर जगत् का केवल निमित्तकारण है; उपादानकारण नहीं। इस आधार पर प्रस्तुत नियम में आदिमूल का अर्थ निमित्तकारण ही हुआ, अतः इस नियम का भाव इस प्रकार हुआ–वेद और कार्यजगत् का निमित्तकारण परमेश्वर है। बीज रूप में इस नियम से आर्यसमाज के दो मौलिक–सिद्धान्तों की जानकारी मिलती है– (1) **वेद अपौरुषेय** हैं, (2) परमेश्वर जगत् का निमित्तकारण है। इसमें यह भी अन्तर्निहित है कि यह जगत् सत्य है, मिथ्या नहीं और नवीन वेदान्तियों का ब्रह्मवाद का सिद्धान्त असत्य है। इसके साथ ही इस नियम में **भौतिकवाद** के इस मत का भी खण्डन हो जाता है कि जगत् बिना किसी चेतन सत्ता की सहायता के प्रकृति से स्वयं उत्पन्न हो जाता है। इन तीनों सिद्धान्तों का विवेचन करना यहाँ सम्भव न हो सकेगा, तथापि प्रथम सिद्धान्त– 'वेद अपौरुषेय हैं', का संक्षेपतः वर्णन करना आवश्यक एवं उपयुक्त प्रतीत होता है।

वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है

आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद ईश्वर द्वारा प्रदत्त वह सर्वप्रथम ज्ञान है जो मनुष्यों को सृष्टि–उत्पत्ति के साथ दिया था। यह मान्यता केवल शब्दप्रमाण पर ही आधारित नहीं हैं, वरन् तर्क–संगत भी है। वेद की अपौरुषेयता पर विचार करते समय हमारे सामने एक प्रश्न उपस्थित होता है, जिस पर विचार करना आवश्यक है। वह यह है कि विभिन्न मतावलम्बी सभी लोग अपने–अपने धर्मग्रन्थों को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। ऐसी अवस्था में किसको ईश्वरीय ज्ञान माना जाए और किसको नहीं? इसके उत्तर में हम यही कह सकते हैं कि सब मतों के दावों को कसौटी पर कसकर देख लो जो उस पर खरा उतर जाए वही ईश्वरीय ज्ञान हो सकता है। यहाँ कतिपय कसौटियाँ प्रस्तुत की जाती हैं–

1. ईश्वरीय ज्ञान मानवसृष्टि के साथ ही सृष्टि के आरम्भ में मिलना चाहिए।
2. ईश्वरीय ज्ञान किसी देश विशेष की भाषा में न हो।
3. ईश्वरीय ज्ञान के ग्रन्थ में किसी देश का भूगोल व इतिहास नहीं होना चाहिए।
4. उसमें कोई भी बात सृष्टिक्रम के विपरीत न हो।
5. वह ज्ञान ईश्वर के गुण–कर्म और स्वभाव के अनुकूल होना चाहिए।

6. मानव के पूर्ण कल्याण के लिए जितना ज्ञान अपेक्षित है, वह उस ग्रन्थ में होना चाहिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि इन कसौटियों पर केवल वेद ही खरा उतरता है। वेद का प्रकाश ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के हृदय में किया था। आर्य समाज का दावा है कि वेद में न इतिहास है और न उसमें कोई सृष्टिक्रम के विरुद्ध बात है। वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के सम्बन्ध में कई शंकाएँ प्रस्तुत की जाती हैं। उन सबका महर्षि दयानन्दजी ने सत्यार्थप्रकाश सप्तमसमुल्लास और ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के वेदोत्पत्तिविषय प्रकरण में विस्तार के साथ तर्कसंगत समाधान किया है।

इस नियम की एक दूसरी व्याख्या

कुछ विद्वानों ने इस नियम की एक भिन्न व्याख्या की है उस पर भी विचार कर लेना चाहिए। उनके विचार में अन्वय करने के उपरान्त इस नियम का रूप यह होगा– ''जो सब सत्यविद्या और पदार्थविद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।''

जो सबका अर्थ है–ईश्वर, जीव व प्रकृति। ये तीनों अनादि व अनन्त हैं। सत्यविद्या कहते हैं ब्रह्मविद्या को। इसी को पदार्थविद्या कहते हैं। पदार्थविद्या का अर्थ है सृष्टिविद्या–सम्बन्धी विद्या। यही भौतिक विज्ञान है। इसी को अपरा विद्या कहते हैं। इस प्रकार इस नियम का यह अर्थ हुआ कि ब्रह्मविद्या और सृष्टिविद्या से ईश्वर, जीव व प्रकृति को जाना जाता है और ईश्वर इन सबका निमित्तकारण है। यह अर्थ दोषपूर्ण है। इसमें कई आपत्तियाँ हैं। प्रथम आपत्ति तो यह है कि ईश्वर अपना स्वयं का तथा जीव व प्रकृति का निमित्तकारण नहीं है। द्वितीय आपत्ति यह है कि तीसरे नियम में आता है कि– 'वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक हैं। यदि सत्यविद्या का अर्थ ब्रह्मविद्या है तो क्या वेद में पदार्थविद्या नहीं है? तीसरे नियम में सत्यविद्या नहीं बल्कि सत्यविद्याओं लिखा है। इस अवस्था में सत्य–विद्या का अर्थ केवल ब्रह्मविद्या कैसे किया जाएगा? अतः इस नियम का जो अर्थ हमने पहले किया है, वही ठीक है।

जैसा कि हम प्राक्कथन में लिख चुके हैं कि आर्यसमाज के दश नियमों का आधार वेद है, यहाँ प्रमाणरूप में इस नियम के आधार वेद–मन्त्र उद्धृत किये जाते हैं–

1. ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत।

अर्थ–ऋतं यथार्थं सर्वविद्याधिकरणं वेदशास्त्रम् (यथार्थ सब विद्या का खजाना वेदशास्त्र)

सत्यं– त्रिगुणात्मक प्रकृति जिसका नाम अव्यक्त, सत्, प्रधान है जो स्थूल व सूक्ष्म जगत् का कारण है (अर्थात् प्रकृति) वह भी (अध्यजायत) कार्यरूप में प्रकट हुई। भावार्थ यह है कि ईश्वर ने वेद की रचना की और कार्यजगत् को प्रकृति से उत्पन्न किया।

2. तस्माद्यात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छदाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।
–यजुः अ० 31, मं० 7

अर्थ– उस परब्रह्म से **(ऋचः)** ऋग्वेद (यजुः) यजुर्वेद (सामानि) सामवेद और (छन्दांसि) अथर्ववेद ये चारों वेद उत्पन्न हुए हैं।

3. यस्मादृचो अपातक्षत् यजुर्यस्मादपाकषन्।
सामानि यस्य लोमाण्यथर्वाङ्गिरसो मुखम्।
स्कम्भं तं ब्रूहि कतमः स्विदेव सः।।
–अथर्व० 10। 7। 20

अर्थ– जो सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है उसी से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद ये चारों उत्पन्न हुए हैं।

4. **हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।**
यजुः 13। 4

अर्थ– जो **(हिरण्यगर्भः)** स्वप्रकाशस्वरूप और जिसने प्रकाश करनेहारे सूर्य–चन्द्रमादि पदार्थ उत्पन्न करके धारण किये हैं जो **(भूतस्य)** उत्पन्न हुए सम्पूर्ण जगत् का **(जातः)** प्रसिद्ध **(पतिः)** स्वामी **(एकः)** एक ही चेतनस्वरूप **(आसीत्)** था, जो **(अग्रे)** सब जगत् के उत्पन्न होने से पूर्व **(समवर्त्तत)** वर्तमान था **(सः)** सो **(इमाम्)** इस **(पृथिवीम्)** भूमि **(उत)** और **(द्याम्)** सूर्यादि को **(दाधार)** धारण कर रहा है। हम लोग उस **(कस्मै)** सुखस्वरूप **(देवाय)** शुद्ध परमात्मा के लिए **(हविषा)** ग्रहण करने योग्य योगाभ्यास और अतिप्रेम से **(विधेम)** विशेष भक्ति किया करें। इस नियम से यह तो सर्वथा स्पष्ट ही है कि आर्यसमाज एक ईश्वर–विश्वासी समाज है। स्वभावतः प्रश्न होता है कि वह ईश्वर कौन है? उसका क्या स्वरूप है? इसका उत्तर अगले नियम में दिया गया है।

Prabhu Ka Swaroop

From : Inner Voice of Mahatma Prabhu Ashritji Maharaj by Bharat Bhooshan

When *Gayatri* transforms

I have noticed that despite chanting of the *Gayatri* for lakhs of times, some persons remain far from God–as much as an atheist or a non-believer is.

The main reason for this is that its *jap* is done mechanically which does not bring about the desired transformation.

To be effective, *jap* should be done with focus on the mantra's words (its body), meaning (its life) and sentiment (soul of both the words and meaning).

Only when there is a focus on the three–**words, meaning and sentiment-**that *Gayatri* or any other mantra, brings about the real transformation of the man.

Mind their ethics, not comforts alone

It is unfortunate that while parents take so much pains in rearing their children and making big sacrifice for their physical comforts and upbringing, hardly do they spare time to inculcate in them the basics of ethics, morality and the knowledge of God.

Thus they miss the good opportunity of giving the right *sanskaras* to their children during the formative years of their lives, when whatever they see or hear gets automatically imprinted in their minds and hearts for ever. The result is that in absence of such *sanskaras* and knowledge, gradually they become atheists developing no distaste for or fear of the wrongdoings.

Parents owe it to themselves to find some time during the twenty four hours at their disposal, to give them such *sanskaras.* This can be best done through stories, particularly based on real life situations.

बुढ़ापा दूर रखने वाला संजीवनी पेय

—श्री विट्ठलदासजी तोष्णीवाल

प्रकृति के नियमानुसार बुढ़ापा आना तो निश्चित है, पर उचित आहार–विहार और स्वास्थ्यरक्षक नियमों का पालन करके इसे यथासम्भव दूर रखा जा सकता है। इस दिशा में एक सफल सिद्ध अनुभूत प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है–

शरीरशास्त्री वैज्ञानिकों का मानना है कि जब तक शरीर के कोषाणुओं (Cells) का पुनर्निर्माण ठीक–ठीक होता रहेगा, तब तक बुढ़ापा दूर रहेगा और शरीर युवा बना रहेगा। जब इस प्रक्रिया में विघ्न पड़ता है और कोषाणुओं के पुनर्निर्माण की गति मन्द होने लगती है, तब शरीर बूढ़ा होने लगता है। इस वैज्ञानिक विश्लेषण से एक निष्कर्ष यह निकला कि यदि विटामिन 'ई', विटामिन 'सी' और 'कोलीन'– ये तीन तत्त्व पर्याप्त मात्रा में प्रतिदिन शरीर को आहार के माध्यम से मिलते रहें तो शरीर के कोषाणुओं का पुनर्निर्माण बदस्तूर ठीक से होता रहेगा और जब तक यह प्रक्रिया ठीक–ठीक चलती रहेगी, तब तक बुढ़ापा दूर रहेगा। बुढ़ापा आयेगा जरूर, पर देर से आयेगा।

इस निष्कर्ष पर विचार करके पूना के श्री श्रीधर अमृत भालेरावने यह निश्चय किया कि इन तीनों तत्वों को दवाओं के माध्यम से प्राप्त करने की अपेक्षा प्राकृतिक ढंग से, आहार द्वारा प्राप्त करना अधिक उत्तम और गुणकारी रहेगा। लिहाजा काफी खोजबीन और परिश्रम करके वे इस नतीजे पर पहुँचे कि विटामिन 'ई' अंकुरित गेहूँ से, विटामिन 'सी' नींबू, शहद और आँवले से एवं 'कोलीन' मेथीदाने से प्राप्त किया जा सकता है। इन तीनों पदार्थों का सेवन करने के लिये उन्होंने यह फार्मूला बनाया– 40 ग्राम यानी 4 चम्मच (बड़े) गेहूँ और 10 ग्राम मेथीदाना–दोनों को 4–5 बार साफ पानी से अच्छी तरह धो लें, ताकि इन पर यदि कीटनाशक दवाओं के छिड़काव का प्रभाव हो तो दूर हो जाय। धोने के बाद आधा गिलास पानी में डालकर चौबीस घंटे तक रखें। चौबीस घंटे बाद पानी से निकालकर एक गीले तथा मोटे कपड़े में रखकर बाँध दें और चौबीस घंटे तक हवा में लटकाकर रखें। गिलास का पानी फेंकें नहीं, इस पानी में आधा नींबू निचोड़कर दो ग्राम सोंठ का चूर्ण डाल दें। इसमें 2 चम्मच शहद घोलकर सुबह खाली पेट पी लें। यह पेय बहुत शक्तिवर्धक, पाचक और स्फूर्तिदायक है, इसीलिये इसका नाम श्रीभालेरावने 'संजीवनी पेय' रखा है। चौबीस घंटे पूरे होने पर हवा में लटके कपड़े को उतारकर खोलें और गेहूँ तथा मेथीदाना एक प्लेट में रखकर इसपर पिसी काली मिर्च और सेंधा नमक बुरक दें। गेहूँ और मेथीदाना अंकुरित हो चुका होगा। इसे खूब चबा–चबाकर प्रातः खायें। यदि इसे मीठा करना चाहें तो काली मिर्च और नमक न डालकर गुड़ मसलकर डाल दें, शक्कर न डालें। यह मात्रा एक व्यक्ति के लिये है।

इस फार्मूले का सेवन करने से ये तीनों तत्व तो शरीर को प्राप्त होते ही हैं, साथ ही एनजाइम्स, लाइसिन, आइसोल्यूसिन, मेथोनाइन आदि स्वास्थ्यवर्धक पौष्टिक तत्व भी प्राप्त होते हैं। यह फार्मूला सस्ता भी है और बनाने में सरल भी, इसमें गजब की शक्ति है, यह स्फूर्ति और पुष्टि देने वाला है। इस प्रयोग को प्रौढ़ ही नहीं वृद्ध स्त्री–पुरुष भी कर सकते हैं।

आँवला खायें–बुढ़ापा दूर भगायें

–काशीनाथ आर्य, एम.ए., बी.टी. योगाचार्य

आँवला सर्वश्रेष्ठ शक्तिदायक फल है। इसका दूसरा नाम अमृत–फल है। सचमुच ही इसमें अमृत के गुण हैं। यह विटामिन 'सी' का अनन्त भण्डार है। विटामिन 'सी' का अर्थ है शक्ति और स्वास्थ्य का आवश्यक तत्व। एक पुष्ट ताजे आँवले में बीस नारंगियों के बराबर विटामिन 'सी' रहता है। इस प्रकार यह शरीर को स्वस्थ बनाने के साथ–साथ सुन्दर भी बनाता है। इससे रक्त शुद्ध होता है और शरीर में रोग–प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। आँवले की विशेषता यह है कि इसके विटामिन गरम करने या सुखाने से भी नष्ट नहीं होते। त्रिफला–चूर्ण का मुख्य घटक आँवला ही है। च्यवनप्राश इस अमृत फल से ही बनता है। महर्षि च्यवन ने बुढ़ापा दूर भगाने के लिये अश्विनी कुमार से उपाय पूछा था। उन्होंने च्यवन ऋषि को नित्य इस फल के सेवन करने का निर्देश दिया था। इसी के सेवन से च्यवन ऋषि का बुढ़ापा दूर हो गया था। इन्हीं के नाम पर 'च्यवनप्राश' नाम पड़ गया। ओज, बल एवं युवावस्था को स्थिर रखने और बुढ़ापा दूर करने का यह सर्वश्रेष्ठ आयुर्वेदिक औषध है।

आँवला सर्वरोगनाशक दिव्य अमृत–फल है। यह दाँतों–मसूढ़ों को मजबूत बनाता है, आँखों की ज्योति बढ़ाता है। शरीर में बल–वीर्य की वृद्धि करता है। हाई ब्लडप्रेशर, हृदय रोग, कैंसर, नपुंसकता, मन्दाग्नि, स्नायुरोग, चर्मरोग, लीवर और किडनी के रोग, रक्त के रोग, पीलिया, टी.बी., मूत्ररोग और हड्डियों के रोगों को दूर करने में इसका विशेष योगदान है।

आँवला त्रिदोषनाशक है। इसमें लवण रस को छोड़कर बाकी पाँचों रस भरे पड़े हैं। आधुनिक वैज्ञानिकों ने आँवला पर खोज की है और स्वीकार किया है कि आँवला में पाया जाने वाला एंटी ऑक्सीडेंट इन्जाइम बुढ़ापे को रोकता है। यह खोज तो हजारों वर्ष पहले भारत के प्राचीन ऋषि–मुनियों ने कर डाली थी।

आँवला–तेल सिर के रोगों और बालों के लिये परम हितकारी है। इसे घर में बना लेना चाहिये। बाजार में मिलने वाला अधिकांश आँवला–तेलों में कृत्रिम सेंट मिला रहता है। घर में बनाना चाहें तो तिल के तेल में ताजे आँवले का रस मिलाकर गरम करें। जब उसका पानी जल जाय तो उतारकर ठंडा करके बोतल में भर लें और उपयोग करें।

आँवले में जितने रोग–प्रतिरोधक, रक्त–शोधक और बल–वीर्यवर्धक तत्व हैं, उतने संसार की किसी वस्तु या औषधि में नहीं हैं। इसलिये स्वास्थ्य–सुख चाहने वालों को अपने आहार में आँवले को प्रमुख स्थान देना चाहिये। लगभग बीस ग्राम च्यवनप्राश एक गिलास दूध के साथ नियमित सेवन करने से आप इसके चमत्कारी आशुफलप्रद गुणों से परिचित हो जायेंगे। यह पुनर्योवन प्रदान करने वाला सर्वश्रेष्ठ आहार है।

आत्म-रक्षा

—महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

1. अपनी सम्पत्त (धन अथवा ज्ञान) की रक्षा आप करो, जिससे दूसरे भी उसकी रक्षा करें।
2. यदि तुमने आप ही अपनी सम्पत्ति अथवा पाये हुए धन और निर्धारित नियमों की रक्षा में चूक की तो तुम्हारी निन्दा अवश्यमेव होगी।
3. ऐसा सरल मार्ग स्वीकार करो जिसमें तुम्हें किसी से भी संशित न होना पड़े, अर्थात अपने आपसे भी किसी के मन में संशय या सन्देह पैदा न होने दो।
4. अपनी प्राप्त सामर्थ्य, शक्ति, धन, इष्ट, मित्र, स्त्री, पुत्र और शरीर की पूरी—पूरी रक्षा करो। दूसरों के लिए व्यर्थ ही उनकी बलि न दो नहीं तो निशक्त हो जाओगे।
5. कभी किसी कपट जाल में फंसने की कोशिश न करो। नाम पैदा करने की इच्छा न करो। यह सबसे बड़ा कपट जाल है।
6. यदि कभी किसी पुरुष या स्त्री की सुन्दरता का ध्यान अथवा विचार तुम्हारे चित्त में आए तो यह समझो कि तुमने प्रभु का ध्यान बिसार दिया है और तुम पतित हो गए हो। प्राकृतिक सौन्दर्य का विचार ही प्रकृति पूजा है। परमेश्वर स्वयं सौन्दर्य के केन्द्र हैं। उनकी सुन्दरता की अपेक्षा यदि कोई और सौन्दर्य ध्यान में समा जाए तो यह घोर नास्तिकता होगी। सावधान रहो! नहीं तो इससे तुम्हारा किया कराया तप नष्ट हो जायेगा और तुम नए सिरे से जन्म—मरण के जाल में फंस जाओगे।
7. अपनी शक्ति से अधिक अपने ऊपर बोझ न लो, नहीं तो तुम बदनाम हो जाओगे और दुःखी रहोगे। यदि तुम में दूसरों से कोई विशेषता है, तो उस विशेषता को सदैव अपनी दृष्टि के सामने रखो, वही तुम्हारा लक्ष्य रहे। उससे दृष्टि हटाते ही तुम अवश्य पछताओगे।
8. प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को सर्वोत्तम समझता है। परन्तु दूसरा उसमें कोई न कोई त्रुटि निकाल ही देता है। अतएव यह आवश्यक है कि तुम त्रुटि दिखाने वाले का उपकार मानो। वही तुम्हारे जीवन का पथ—प्रदर्शक है।
9. यदि कोई मनुष्य तुम्हारी दूर हुई त्रुटियों के सम्बन्ध में अपनी दुष्टता या दुर्जनता के कारण, गत समय की याद दिलाकर कोई बात कहता है तो उसे शान्तिपूर्वक सहन करो! नहीं तो तुम में एक नई त्रुटि पैदा हो जाएगी। यह न सहन करने की त्रुटि ऐसी प्रबल है कि पीछे से और बीसियों दुर्बलताओं को उत्पन्न कर देती है और अपने साथ मिला लेती है। अतएव तुम केवल दुष्टता से तुम्हारी त्रुटि को वर्णन करने वाले किसी व्यक्ति की कुछ परवाह न करो इसी में तुम्हारी वीरता और कल्याण है।
10. अपने शुभ गुण या भलाईयों को दूसरों की बुराईयों को दिखाने या दूसरों की बुराई करने में नष्ट न करो। सदैव यह याद रखो कि अच्छाई में अच्छाई यही है कि वह बुरों और बुराइयों में भी अच्छाई पैदा कर दे।
11. यदि तुमने अपने शुभ गुणों की दूसरों की बुराई अथवा उनके दुर्गुणों से तुलना की तो याद रखो तुम इस प्रकार दूसरों की बुराई मोल ले लोगे और अपनी भलाई को नष्ट कर दोगे।
12. अपनी बुराई की दूसरों की भलाई से तुलना करके सदा लज्जित होते रहो और अपनी बुराई को तथा अपने अवगुणों को प्रकट करना सीखो।
13. सब साधारण मनुष्यों में अपने दोषों को प्रकट न करते रहो। यदि तुम्हारा स्वभाव बन गया तो तुम उस बुराई को और भी दिलेरी से करने लगोगे। इस प्रकार तुम्हारा दोष नहीं छूटेगा। अपने पूज्य पुरुषों के सामने अपने दोष प्रकट करो, जिससे तुम्हें उनके कहने में कुछ लज्जा आए। इस प्रकार दोष धीरे—धीरे दूर हो जायेंगे।
14. हमने यह माना तू बहुत अच्छा बोलने वाला है, और तू शुद्ध भाव, लग्न तथा प्रेम से केवल दूसरों के हित साधना के लिए अपनी वक्तृता शक्ति का समर्पण करता है परन्तु जब तेरा बोलना जनता को न भाये तो तू अपनी शक्ति को व्यर्थ नष्ट होने से बचा।

जीवनोपयोगी संदेश

—स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

- जब हम छोटी—छोटी बातों पर ध्यान देते हैं तो महान उन्नति होती है, परन्तु महान उन्नति कोई छोटी बात नहीं है।
- कार्यों को छोटा मानकर उपेक्षा न करें ये छोटे—छोटे कार्य ही कल बड़ी सफलता दिलाएंगे।
- सफलता दौड़ के अंतिम कदम से ही नहीं मिलती, बल्कि प्रत्येक कदम का उसमें भाग (योगदान) होता है। इसलिए प्रत्येक कदम सोच—समझ कर सही रखें और जीतें।
- छोटे से छोटा काम भी पूरी श्रद्धा, बुद्धि और लगन से करें। ईश्वर की कृपा से सफलता निश्चित मिलेगी।
- यदि आप अपने कार्य में आनंद लेते हैं, तो कार्य में सफलता निश्चित है। यदि अपने कार्य को मुसीबत समझते हें, तो सफलता में संशय है।
- **सफलता के चार सूत्र—**
  एक—ध्यान से सुनना। दो—गहराई से विचार करना। तीन—सही निर्णय लेना। चार—उसको आचरण में लाना।
- सफल व्यक्ति उत्तम फल की नहीं, उत्तम आरंभ की योजना बनाते हैं। आरंभ उत्तम होने पर उत्तम फल तो स्वयं ही मिल जाता है। इसलिए उत्तम आरंभ करें।
- मन में इच्छा तीव्र हो, बुद्धि पवित्र हो, शरीर से पूरी ताकत लगाएं, तो सफलता निश्चित है। परन्तु जिन लोगों की इच्छा ही नहीं है, न बुद्धि पवित्र है और न ही वे पूरी शक्ति लगाते हैं; उन्हें सफलता की आशा नहीं रखनी चाहिये।
- सफलता आपकी परछाई है। यदि आप प्रकाश की तरफ चल रहे हैं, तो इसे पकड़ने की कोशिश न करें, यह स्वयं ही पीछे—पीछे आएगी।
- सुबह से ही तीन चीजें अपने साथ रखें :—
  एक—ईश्वर में विश्वास। दो—उन्नति के लिए पुरुषार्थ। तीन—अपने काम के प्रति ईमानदारी। **सफलता निश्चित।**
- अच्छे लोगों की संगति ऐसी है, जैसे सुगंधित अगरबत्तियों की दुकान। चाहे हम उस दुकान से कुछ खरीदें या न खरीदें, सुगंध तो मिलेगी ही।
- फूलों की सुगंध उसी दिशा में जाती है, जिधर की हवा हो, पर गुणी व्यक्ति के गुणों की सुगंध चारों दिशाओं में फैलती है। गुणवान बनें।
- इकट्ठे होना— यह आरंभ है। इकट्ठे रहना—यह प्रगति है। इकट्ठे मिल कर काम करना—यह सफलता है। इसलिए जीवन में सफल बनें।
- आपके स्वप्नों में किसी को रुचि नहीं है। आपके साथी तब तक आपके स्वप्नों का मजाक उड़ाएंगे, जब तक आप उन्हें सच्चाई में नहीं बदल देते। पुरुषार्थ करके अपने सपनों को साकार करें।
- END का अर्थ 'समाप्त' नहीं है। बल्कि इ—एफर्ट, एन—नेवर, डी—डाइस। मतलब और पुरुषार्थ करो। ''अगले अवसर'' का लाभ लो।
- जो खो दिया, उसको न सोचें, क्योंकि खोया हुआ वापस नहीं आएगा। हम, भविष्य को अच्छा बनाएं, शायद खोए हुए जैसा फिर से और मिल जाए।
- समुद्र की लहरें हमें इसलिए प्रेरणा नहीं देती कि वे गिरती—उठती हैं। बल्कि इसलिए कि— वे कुछ ''गिर कर हर बार उठने की कोशिश करती है।''
- किसी को हराना तो आसान है, परंतु किसी का हृदय जीतना बहुत कठिन है।
- सितारों को जीतना काल्पनिक और सरल है। दूसरों के मन को जीतना वास्तविक और कठिन है। ईश्वर—कृपा और अपने गुणों से दूसरों के मन को जीतें।
- इतवार को भी कुछ काम अवश्य करें क्योंकि इतवार (रविवार) को भी हम कुछ न कुछ सुख भोगते ही हैं। बिना पुरुषार्थ के सुख भोगना अच्छा नहीं है।

ओ३म्

धर्म, संस्कृति एवं वेदोद्धारक ऋषि दयानन्द

—मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द ने एक पौराणिक सनातनी परिवार में जन्म लेकर महामानव अर्थात् ऋषि व महर्षि बनने का एक महान जीवन यज्ञ रचाया और सफलता प्राप्त कर अपने विद्या गुरु प्रज्ञाचक्षु दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती की प्रेरणा से अनार्ष ज्ञान व परम्पराओं का खण्डन करने के साथ—साथ मानव मात्र के लिए हितकारी, कल्याणकारी व लाभकारी वैदिक सर्वजनहितकारी परम्पराओं को प्रचलित किया। स्वामी दयानन्द जी का वेदों सहित वेदानुकुल सभी शास्त्रों का ज्ञान ऐसा है जिसका पालन कर संसार के अधिक से अधिक लोग सुखी व सन्तोषजनक जीवन व्यतीत कर सकते हैं व दुःखों पर विजय पाकर मनुष्य जीवन के दो प्रमुख लक्ष्यों इहलौकिक व पारलौकिक उन्नति को प्राप्त कर सकते हैं। उनकी एक बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने केवल मौखिक उपदेश ही नहीं दिए अपितु अपने वैदिक सिद्धान्तों व मान्यताओं के प्रकाशक सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कारविधि एवं आर्याभिविनय आदि अनेक ग्रन्थों की पूर्ण निष्पक्ष भाव से रचना कर सभी मनुष्यों को दे गये हैं जो आज भी लाखों व करोड़ों मनुष्यों का पथ प्रदर्शित कर रहे हैं। उनका ज्ञान व विद्या तो संसार के सभी मनुष्यों के लिए उपलब्ध है परन्तु बहुत से अज्ञानी लोग अपने वास्तविक हित को न जान कर स्वार्थ व लोभ आदि में फंसे हुए इसका लाभ नहीं ले सके। इसका प्रमुख कारण है कि उन्हें मत—मतान्तरों के चालाक स्वार्थी लोगों ने बहला—फुसला रखा है जिस कारण वह वैदिक अमृत का पान करने से वंचित हैं।

संसार में सबसे उत्तम व महत्वपूर्ण वस्तु जो मनुष्यों के लिए सर्वाधिक हितकारी व लाभकारी है, वह सद्ज्ञान से इतर अन्य कोई नहीं है। महर्षि दयानन्द ने इसी सर्वोत्तम वस्तु **''सत्य आध्यात्मिक व सांसारिक ज्ञान''** की खोज कर विश्व को प्रदान की है। भारत के कुछ विज्ञ व निःस्वार्थ प्रकृति के लोगों ने इसका लाभ उठाया और वह इससे पूर्ण सन्तुष्ट व अनुग्रहित हैं। वेद एवं वैदिक साहित्य मनुष्य जीवन को सृष्टिकर्ता ईश्वर की आज्ञा व इच्छानुसार व्यतीत कर इहलौकिक व पारलौकिक उन्नति अर्थात् अभ्युदय व निःश्रेयस प्राप्त कराने का एकमात्र सरल व सफलता प्रदान करने वाला साधन है। **मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी इन दोनों उन्नतियों को प्राप्त करना ही है।** एंकागी सांसारिक व भौतिक उन्नति, उन्नति नहीं अपितु यह एक प्रकार से मनुष्य के लिए अभिशाप है। इसका कारण यह है कि आध्यात्मिक उन्नति की उपेक्षा की कीमत सभी मनुष्यों को जन्म जन्मान्तरों में ईश्वर की आदर्श कर्म—फल व्यवस्था के अनुसार चुकानी पड़ती

है। **वह लोग धन्य हैं जो भौतिक उन्नति को अपना सर्वस्व व सर्वोपरि न मानकर आध्यात्मिक उन्नति को अधिक महत्व देते हैं। अध्ययन से प्राप्त ज्ञान से हमें यह स्पष्ट लगता है कि आवश्यकतानुसार धन व भौतिक साधनों से युक्त सन्तुलित आध्यात्मिक व वैदिक मूल्य प्रधान जीवन ही सर्वश्रेष्ठ है जिसका प्रचार महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश आदि अपने अनेक ग्रन्थों में किया है।** हमारे सम्मुख अनेक महापुरुष हैं जिन्होंने महर्षि दयानन्द की विचारधारा व सिद्धान्तों को अपनाया और त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत कर समाज में एक अनुकरणीय प्रेरणादायक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया है। ऐसे लोगों में हम स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, पं. लेखराम आर्यमुसाफिर, महात्मा हंसराज, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, पं. गणपति शर्मा, महात्मा कालूराम जी, महात्मा नारायण स्वामी, डा. रामनाथ वेदालंकार आदि को सम्मिलित कर सकते हैं जिनकी कीर्ति आज अनेकों वर्ष व्यतीत हो जाने पर भी बनी हुई है। ऐसे बहुत से लोग हुए हैं जिन्होंने करोड़ो–अरबों रुपये व इससे कहीं अधिक धन कमाया, उद्योग व अन्य प्रकार के व्यवसायों के द्वारा प्रभूत भौतिक उन्नति की परन्तु आज दिवंगत व जीवित होने पर भी विद्वानों में उन्हें कोई स्मरण कर उनके प्रति नतमस्तक नहीं होता। इसी से अनुमान लगता है कि महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी विद्वान महात्माओं का जीवन दर्शन ही अनुकरणीय एवं आचरणीय है जो मनुष्यों को अभ्युदय और निःश्रेयस प्राप्त कराता है।

जीवन पद्धति में यौगिक जीवन प्रणाली का विशेष महत्व है जिसमें योगासनों, प्राणायाम और ध्यान आदि क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। महर्षि दयानन्द ने वेद और वेदानुकूल शास्त्रों एवं मान्यताओं का प्रचार किया था। महर्षि पतंजलि के योगदर्शन को वेदों का उपांग होने का सौभाग्य प्राप्त है। महर्षि दयानन्द जी का अपना जीवन योगदर्शन का ही साक्षात रूप था। योग के आठ अंगों का वह पूरा पूरा पालन करते थे और इसी से उन्हें वेदों के गुप्त रहस्यों को जानने की क्षमता व योग्यता प्राप्त हुई थी। उनको जो ऋषित्व अर्थात् सद–असद–विवेक प्राप्त हुआ, उसका आधार उनका शास्त्रीय अध्ययन सहित योगाभ्यास व योगमय जीवन ही है। महर्षि दयानन्द समाधि सिद्ध योगी थे। जीवन के अन्तिम समय में उनको विष दिया गया जिसके कारण उनका सारा शरीर असाध्य रोग से ग्रसित हुआ। विष के प्रभाव व उससे उत्पन्न अनेक रोगों की असह्य पीड़ा को उन्होंने अपने योगबल और ईश्वरसिद्धि वा ईश्वर–साक्षात्कार से प्राप्त शक्तियों के द्वारा सहन किया और संसार के सामने एक आदर्श उपस्थित किया। उनकी मृत्यु अर्थात् देह त्याग की घटना एक आदर्श घटना बन गई जिसकी उपमा में हमारे सम्मुख किसी पूर्व व पश्चात के महापुरुष का उदाहरण नहीं है। उन्होंने जो जीवन व्यतीत किया, वह उन्हें जन्म व मरण से मुक्त कराकर मोक्ष प्रदान कराने वाला था जिसकी चर्चा वह यदा कदा करते रहते थे और मोक्ष प्राप्ति में बाधक कोई कार्य कभी नहीं करते थे। इस कारण उनका दीपावली सन् 1883 को मृत्यु व बलिदान के बाद मोक्ष प्राप्त करना प्रायः निश्चित है। उनके सभी प्रमुख अनुयायियों ने भी उनके जीवन का ही अनुकरण कर अपने–अपने जीवन को मोक्षगामी बनाया व अनुमानतः कुछ अनुयायी मोक्ष को प्राप्त हुए भी होंगे, ऐसा सम्भव है। अतः सभी मनुष्यों के लिए ऋषि दयानन्द जी का जीवन ही आदर्श व अनुकरणीय है। इसी का संकल्प हमें उनके बलिदान दिवस पर लेना समीचीन है।

महर्षि दयानन्द जी के जीवन का अध्ययन कर अध्येता को वेदाध्ययन करने व वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने की ही प्रेरणा मिलती है। उनके अनुसार प्रत्येक मनुष्य को प्रातः 4:00 बजे शय्या का त्याग कर देना चाहिये। शौच, वायुसेवन व आसन–प्राणायाम आदि से निवृत होकर सन्ध्या व अग्निहोत्र करना चाहिये। प्रातः व सायं सुविधानुसार ऋषि रचित ग्रन्थों सहित वेदों का अध्ययन वा स्वाध्याय करना चाहिये। जीवन में हर समय वैदिक मान्यताओं का पालन करते हुए सत्याचार व कर्तव्यों का पालन करना चाहिये। धनोपार्जनार्थ व्यवसायिक कार्यों से निवृत होकर सायंकाल सन्ध्या, हवन व स्वाध्याय सहित अन्य दैनन्दिन कार्यों को सम्पन्न करना चाहिये। ऐसा करने से मनुष्य की शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक व आत्मिक उन्नति होती है जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष प्राप्त करने में सहायक होती है। वेदानुकूल जीवन से उत्तरोत्तर उन्नति होती है और ज्ञान व अनुभवों में वृद्धि होती है। ऐसा जीवन ही श्रेष्ठ व वरणीय है।

एक प्रश्न यह है कि क्या आप ऋषि के अनुयायी वा आर्यसमाजी हैं? यदि हैं तो आप अवश्य संन्ध्या व हवन करते होंगे और नित्य स्वाध्याय भी करते होंगे। हमें लगता है कि योगदर्शन में भी यम व नियमों के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य, तप, ईश्वर प्रणिधान व ध्यान में सन्ध्या व हवन भी निहित है। वेदाध्ययन करने से सन्ध्या व यज्ञ मनुष्य के कर्तव्य निर्धारित होते हैं जो स्वाध्याय के अन्तर्गत है। स्वाध्याय का तो पांच नियमों में स्पष्ट विधान है ही। अतः हमें लगता है कि सभी मनुष्यों को चाहे वह आर्यसमाजी न भी हो तो भी सन्ध्या, हवन व स्वाध्याय तो अवश्य ही करना चाहिये। जीवन में सत्यार्थप्रकाश जितना शीघ्र हो सके, आद्योपान्त पढ़ना चाहिये। यदि पढ़ लिया हो तो दूसरी व तीसरी बार पढ़ना चाहिये, इससे अवश्य लाभ होगा। अन्य ग्रन्थों का भी अध्ययन व अवलोकन करना लाभदायक है। ऐसा करने से भी ज्ञान वृद्धि होकर जीवन शुद्ध व पवित्र बनता है। सत्यार्थप्रकाश और ऋषि दयानन्द के सभी ग्रन्थ मनुष्यों को वेदों का ज्ञान कराते हैं जो अन्यथा सम्भव नहीं है। इस अध्ययन व जीवनचर्या से मनुष्य मिथ्या पूजा–पाठ व कर्मकाण्डों से बच जाते हैं। समय व धन की बचत होने के साथ आध्यात्मिक उन्नति निश्चय ही होती है। अतः वेदों की शरण में आने के लिए वेदाध्ययन हेतु ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का अध्ययन अवश्य करें, यही ऋजु व ईश्वर तक पहुंचने का सुगम व सरल मार्ग है।

महर्षि दयानन्द जी का आत्मोसर्ग वा बलिदान दीपावली के दिन हुआ था। उनका मूल्यांकन करते हुए इस प्रश्न पर भी विचार करना चाहिये कि यदि वह न आये होते और जो कार्य उन्होंने किया है, वह न किया होता तो देश और समाज की क्या स्थिति होती? पहला उत्तर तो यह है कि उन्होंने वेदों का उद्धार किया, वह कदापि न होता। वेदों का उद्धार न होता तो देश अन्धविश्वास, अविद्या, रूढ़िवाद और पाखण्डों से बाहर न निकलता और अंग्रेजों व अन्यों की गुलामी भी समाप्त न हुई होती। अविद्या का नाश ऋषि दयानन्द का उद्देश्य व लक्ष्य था और विद्या की उन्नति उन्हें अभीष्ट थी। यह लक्ष्य पूरा भले ही न हुआ हो, इसमें प्रगति तो हुई ही है। इसका श्रेय भी महर्षि दयानन्द जी को है। उनके आने से पूर्व हिन्दुओं का अपनी अज्ञानता व ईसाई व मुस्लिमों द्वारा प्रलोभन व भय आदि से धर्मान्तरण किया जाता था। सदियों से यह क्रम चल रहा था जिससे हिन्दुओं की संख्या घट रही थी और विधर्मियों की संख्या बढ़ रही थी। ऋषि दयानन्द जी

द्वारा सभी मतों की अविद्या, अन्धविश्वासों व पाखण्डों का खण्डन करने और वेदों व सत्य वैदिक मान्यताओं का प्रचार करने से धर्मान्तरण पर रोक लगी। हिन्दुओं का धर्मान्तरण समाप्त तो न हो सका परन्तु कम बहुत हुआ। ऋषि दयानन्द द्वारा सप्रमाण स्त्री व शूद्रों को शिक्षा सहित वेदाध्ययन का अधिकार भी दिया गया। प्राचीन भारतीय वैदिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा का गुरुकुलों व दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक स्कूल व कालेजों की स्थापना होने से प्रायः देश भर में प्रचार हुआ। सामाजिक असमानता दूर व कम हुई। अस्पर्शयता व छुआछूत समाप्त होकर समाज में एकरूपता व समरसता का संचार हुआ। वर्तमान के अन्तर्जातीय विवाहों को वैचारिक और शास्त्रीय आधार मिला जिससे आज का समाज कई दृष्टियों से आधुनिक बना। हिन्दु समाज में प्रचलित मिथ्या परम्पराओं व रूढ़िवाद की अप्रासंगिकता से भी सभी विज्ञ लोग परिचित हुए। बेमेल विवाह बन्द हुए और विधवाओं के विवाह को भी तार्किक आधार व बल मिला।

महर्षि दयानन्द ने जो कार्य किया उसका प्रभाव हिन्दू पौराणिक सनातनी विचारधारा के अनुयायियों पर सर्वाधिक पड़ा, वहीं उनके ज्ञान व प्रचार से विश्व स्तर पर अन्य धर्मों व मतों के लोग भी लाभान्वित हुए। उनकी आलोचनाओं के परिप्रेक्ष्य में सभी ने अपने धर्म ग्रन्थों का पर्यावलोचन कर उसे तर्क की तुला पर स्थिर करने के प्रयत्न किये। यह बात अलग है कि वह इसमें पूर्णतः सफल नहीं हो सके। आज भी उनमें सुधार की आवश्यकता है। बहुत से अन्य मतों व धर्मों के विद्वान व विज्ञ लोगों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म को स्वीकार कर उसकी सार्वभौमिकता को भी सिद्ध किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रयासों से बहुत से धर्मान्तरित लोगों ने पुनः वेदों की शरण ग्रहण की। आज वेद समस्त विश्व में ज्ञान की प्रथम पुस्तक व धर्म ग्रन्थ के रूप में प्रतिष्ठित हैं। वेदों की भाषा संस्कृत को विश्व की श्रेष्ठतम, प्राचीनतम व सबसे अधिक वैज्ञानिक होने का दर्जा प्राप्त है। यह सब भी महर्षि दयानन्द जी की देने हैं। अतः महर्षि दयानन्द का योगदान महाभारत के बाद हुए सभी महापुरुषों में सर्वाधिक है। उन्हें सश्रद्ध नमन कर लेख को विराम देते हैं।

Kayakalp

From : Inner Voice of Mahatma Prabhu Ashritji Maharaj by Bharat Bhooshan

What damage these passions do

- Lust makes a person fidgety, restless and shameless.
- Anger causes doubts and dilemmas and makes one cruel.
- Greed makes one ever dissatisfied, filling him with jealousy and envy.
- Attachment gives rise to stubbornness and obduracy.
- Ego makes one rash, impetuous and impatient.

Where do these weaknesses lie?

Harshness lies in speech and attachment in eyes; selfishness, jealousy and hatred in mind and ego in the intellect.

There obstacles

Here are three obstacles, which a devotee must guard against :

- Too much praise and honour, which makes him egoistic.
- Receiving too much service, which makes him dependent on others and also lazy; and
- An illusory belief in his own perfection, which leads to his destruction.

चरैवेति चरैवेति–चलते रहो

–ओमप्रकाश अग्रवाल

हमारे शास्त्रों ने कुछ सन्देश दिए हैं– चरैवेति का अर्थ है चलते रहो। यह सारी सृष्टि चल रही है। जीव–जन्तु, पानी की दुनिया, आकाश की दुनिया, सब संसार चल रहा है। जो हम खाना खाते हैं वो भी आंतों में चल रहा है। कुछ चीजें दिखती नहीं फिर भी चल रही है। खून का दौरा एक मिनट में कितनी बार हो जाता है। इसलिए इन्सान तू भी चल, आलस्य मत कर। जीवन ही चलने का नाम है। जो इन्सान चलता है वो ही मंजिल पर पहुँच पाता है जो चला ही नहीं वो क्या पहुँचेगा? कबीर जी भी कहते हैं जो घर से स्टेशन की तरफ चल पड़ा उसको तो गाड़ी मिल सकती है। जो घर से चला ही नहीं उसको कैसे मिल सकती है? कोई भी दुनिया का काम करे बगैर होगा नहीं।

अपने आप कुछ नहीं होता, करना पड़ता है। जैसे सामने थाली पड़ी है, उसमें अच्छे व्यंजन पड़े हैं, जब तक आप हाथ हिलाकर खाओगे नहीं वो कैसे मुँह तक जाएगा। कोई आदमी पेड़ के नीचे लेटा था। बेर के पेड़ से एक बेर उसके पेट पर आ गिरा। जो भी आदमी उसके पास से गुजरता वो उससे कहता– यह बेर मेरे मुँह में डाल दो। एक आदमी बोला– तुझे परमात्मा ने हाथ दिए हैं। हाथ हिलाकर मुँह में डाल ले। वो आलसी बोला–मैंने तो बेर डालने के लिए कहा था। भाषण देने के लिए नहीं कहा था। कुछ लोगों को करने से डर लगता है। वो अपने आप पर बोझ होते हैं, समाज पर भी बोझ होते हैं। यह संसार कर्मशील का ही बनाया हुआ है। किसी ज्योतिषी का बनाया नहीं है। हमने अपने जीवन में भी देखा है जो लोग चलते हैं वो तरक्की कर गए। इसके लिए दिशा भी सही होनी चाहिए। हमारे शास्त्र भी कहते हैं– चलते रहो। जब कोई खड़ा हो जाता है तो उसे सहारे की ज़रूरत पड़ती है। जैसे साइकिल होती है। अगर चले तो खुद भी चलती है और जो उस पर बैठता है उसको भी ले जाती है। वज़न भी उठा लेती है। अगर साइकिल खड़ी करनी पड़े तो अपने आप खड़ी नहीं हो सकती। उसको सहारे की ज़रूरत पड़ती है। यही हाल ज़िन्दगी का है। चलते रहने से जीवन में नया बहुत कुछ मिलता है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून में पधारने वाले सभी अतिथियों एवं साधकों से विनम्र निवेदन है कि वह अपने साथ अपना आई.डी. प्रूफ साथ लेकर आयें ताकि आश्रम में निवास करने में उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई न हो। तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता कर सकते हैं।

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(6 नवम्बर सायंकाल से 13 नवम्बर प्रातः 2016)

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन

रायपुर रोड (नालापानी), देहरादून–248008, दूरभाष : 0135–2787001

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 6 नवम्बर सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रातः 13 नवम्बर को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर **आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य** के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतु मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक–पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर मे विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतू सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 6 नवम्बर सायंकाल 6.00 बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी है।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 125 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अतः इच्छुक–जन पूर्व ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी भी भाग ले सकते है।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें :–1. श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, मो.नं.–09310444170 समय दिन में 10.30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 10 बजे तक, 2. श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर, मो. 09416446305 समय प्रातः 10.00 से सांय 5.00 बजे तक, 3.श्री विजेश गर्ग जी देहरादून। 0135–2787001 समय 10.00 बजे से सायं 4.00 बजे।
6. अपनी वापिसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नहीं है।
7. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें।
8. शुल्क–इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
9. आवश्यकता होने पर आचार्य आशीष जी (मो.नं.–09410506701) से रात्रि 8.00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवेदक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**संतोष रहेजा**
अध्यक्ष–09710033799	सचिव–09412051586	उपाध्यक्षा–09910720157

श्रद्धांजलि

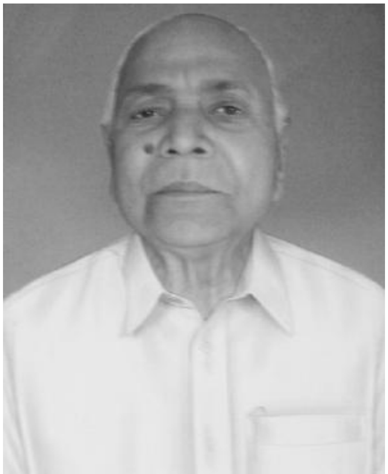

श्री मदन मनोहर लाल आर्य
(29–10–1937) से (26–08–2016)

श्री मदन मनोहर लाल आर्य महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त, सच्चे आर्य एवं गरीबों के रहनुमा थे। उन्होंने अपना पूरा जीवन राष्ट्र भक्ति एवं जरूरतमन्दों की सेवा में अर्पित कर दिया। वह आर्य समाज मण्डी कालाँवाली हरियाणा के संरक्षक, योगधाम ज्वालापुर के सक्रिय सदस्य एवं वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून के संरक्षक मण्डल के सदस्य थे। आप प्रतिवर्ष तपोवन आश्रम देहरादून के कार्यक्रमों में सपरिवार आकर अपना मार्गदर्शन एवं आर्थिक योगदान करते थे। श्री मदन मनोहर लाल आर्य जी के निधन का समाचार सुनकर देहरादून के सभी आर्य परिवारों एवं तपोवन आश्रम में शोक की लहर दौड़ गई। तपोवन आश्रम में सभी आश्रमवासियों ने दिनांक 27–08–2016 को यज्ञ के उपरांत दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके सद्‌गुणों को स्मरण किया तथा परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की कि उनके पुत्र एवं पौत्र आदि सभी परिवारजन पूर्व की भांति तपोवन आश्रम देहरादून के कार्यक्रमों में आते रहे हैं और अपने पिताजी के पद्‌चिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज की पताका को सदैव ऊँचा उठाये रखें। हम पवमान पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य श्री मदन मनोहर लाल आर्य जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

सादर अनुरोध

तपोवन आश्रम के सदस्य बनें और आश्रम द्वारा किये जा रहे जनोपयोगी कार्यों में सहयोग प्रदान करें।

साधारण सदस्य रु. 1200/– प्रति वर्ष	सम्मानित सदस्य रु. 25000/– प्रति वर्ष
सहायक सदस्य रु. 6000/– प्रति वर्ष	विशिष्ट सम्मानित सदस्य रु. 50000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सदस्य रु. 12000/– प्रति वर्ष	

तपोवन आश्रम का मेन गेट रात्रि 9 बजे बंद कर दिया जाता है यदि आप रात्रि 9 बजे के बाद आश्रम में निवास हेतु आ रहे हैं तो कृपया आश्रम के कर्मचारी श्री प्रकाश–8954361107 अथवा श्री जगमोहन–7830798919 पर पूर्व में ही सूचित कर दें ताकि आपके आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था की जा सके।

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता करें।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि	क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	डा० शशी वर्मा, फरीदाबाद	5000	19.	श्री रवि गुप्ता, फरीदाबाद	500
2.	श्रीमती संगीता विज, फरीदाबाद	5000	20.	श्रीमती कमला गुप्ता, फरीदाबाद	500
3.	श्री अनिल वर्मा, नई दिल्ली	11000	21.	अनन्या एवं अनुभा गुप्ता, फरीदाबाद	500
4.	श्री एस.एस. टुटेजा, फरीदाबाद	1100	22.	श्रीमती कृष्णा भाटिया, फरीदाबाद	250
5.	श्रीमती पूनम अम्बा, नई दिल्ली	1100	23.	श्री वेद गुलाटी, फरीदाबाद	500
6.	श्रीमती सन्तोष जसूजा, नई दिल्ली	1100	24.	आर्य समाज सैन्ट्रल, फरीदाबाद	2100
7.	श्रीमती इन्द्रा बैन्दा, फरीदाबाद	500	25.	श्री संजय रात्रा, फरीदाबाद	1100
8.	श्रीमती भारती गुप्ता, फरीदाबाद	1000	26.	श्री अंकुर गुप्ता, राजस्थान	500
9.	श्री विमोक्ष चावला, फरीदाबाद	500	27.	श्री बी.बी. जौहरी, दिल्ली	30000
10.	श्रीमती सेवती अग्रवाल	500	28.	श्री ज्ञानचन्द अरोड़ा, दिल्ली	20000
11.	श्रीमती स्वराज घई, गुड़गांव	1100	29.	श्री विजय सचदेवा, देहरादून	5000
12.	श्रीमती रेखा भुवालका, फरीदाबाद	500	30.	श्री केसर दास लूथरा, देहरादून	10000
13.	श्रीमती लाजवन्ति चौधरी, फरीदाबाद	200	31.	पम्पी लूथरा, देहरादून	5100
14.	श्री राजकमल, फरीदाबाद	500	32.	श्रीमती कृष्णा माच, देहरादून	2000
15.	श्रीमती सुशीला अरोड़ा, फरीदाबाद	1000	33.	श्रीमती शशी मल्होत्रा, दिल्ली	2000
16.	श्रीमती नीलम गिरधर, फरीदाबाद	500	34.	श्री वेद मलिक, दिल्ली	1000
17.	श्री शिवकुमार टुटेजा, फरीदाबाद	500	35.	श्री सुधीर सचदेवा, देहरादून	1000
18.	श्री रवीन्द्र कुमार गुप्ता, फरीदाबाद	500	36.	श्री पम्मी सचदेवा, देहरादून	1000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

वधु की आवश्यकता

हिमाचल प्रदेश निवासी 45 वर्षीय कुरुक्षेत्र गुरुकुल से दसवीं कक्षा तक शिक्षित युवक के लिए योग्य शिक्षित, गृह कार्य में कुशल आर्य कन्या की आवश्यकता है। हिमाचल में स्वयं के सेब के बगीचे हैं। इच्छुक व्यक्ति निम्न दूरभाष पर सम्पर्क कर सकते हैं।

सम्पर्क सूत्र : 08894662043

दिनेश कुमार, पुत्र स्व० श्री बिहारी लाल, ग्राम खड़ा पत्थर, पोदीम तहसील जुब्बल, जिला शिमला (हि.प्र.)

आर्य समाजी परिवार के संस्कारित 27 वर्षीय, भारतीय वायु सेना में पायलट युवक हेतु आर्य समाजी परिवार की कन्या की आवश्यकता है। केन्द्रीय विद्यालय में कार्यरत, पी.एचडी., एम.फिल. अथवा बी.एड. कन्याओं को वरियता दी जायेगी।

सम्पर्क सूत्र : 09717296647

Saturn Series

CPU Holder

Slide out Keyboard tray

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055

Ph : 011-23540721, 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

E-mail : delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17

समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

TPM Certified

ISO / TS - 16949 - 2002 Certified

ISO - 14001 Certified

OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्क्स
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उदयोगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com